ऑगस्ट २०२२

हर महिने के १०/११ तारीख को शाया (प्रसिद्ध) होता है।

दिन–दुनिया की मालूमात को कामयाबी की ओर ले जानेवाला इस्लामी माहनामा (डायजेस्ट)

मुस्तफा

स्व.अ.स

शुमारा हदिया : २५ /–

* साल १५ * शुमारा ८ * मुहर्रम * हिजरी १४४४

- संस्थापक
  हाजी ए.आय.मुजावर
- संपादिका
  प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला
  ७८४१९३७३९३
- मांडणी सजावट
  रेहान ग्राफीक्स, सांगली.
  ९९२३४३७३६७

ध्यान से पढीए

सालाना मुल्य केवल २५०/– रू.

(सालाना विशेषांक के साथ)

- सालाना मेम्बरशीप इधर–उधर किसी नाम पे मत भेजिए।

मुस्तफा लाईफटाईम मेंबरशीप

४000रू/–

इस बैंक खातेपर कहींसे भी फिस जमा कर सकते है –

* सालाना मेम्बरशीप फिस रू. २५०/–

नैशनलाईज बँक के चेक पर

SBI A/c No.20240440743

IFSC COD : SBIN0008234

Google Pay No. 7841937393

• आईना •

– : खतो – किताबात का पता : –

संस्थापक:
ए. आय. मुजावर, संपादक – मुस्तफा
५७९, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.

संपादिका:
प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला
५९८, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.
email : mustafathemagazine@gmail.com , 7841937393

प्यारे नबी की प्यारी बातें

✻ मुसलमान जब अपने घरवालोंपर खर्च करता है और खर्च करते वक्त सवाब की नियत रखता है तो वह खर्च इसका सदका बन जाता है।

✻ हुजूर स्व० ने फरमाया: इलाज नही मिल रहा है तो सदका करो , यही इलाज है।

✻ जब एक मोमिन दुसरे मोमिन से मिलता है, उसे सलाम करता, उसे मुसाफा करता है तो उन दोनों के गुनाह ऐसे झड जाते है, जैसे पेड से पत्ते गिर जाते हैं।

✻ जब कोई आदमी अपने किसी मोमिन भाई के पीठ पिछे उसके लिए दुआ करता है, तो फरिश्ते उसके दुआ पर आमीन कहते है। और उसके लिए भी वैसे ही दुआ करता है।

✻ जब तुम्हें सुकून की कमी महसूस हो तो अपने रब से तौबा किया करो। क्योकिं इन्सान का गुनाह ही है जो दिल को बैचेन रखता है।

✻ वो इन्सान जिंदगी में कभी नहीं हार सकता जिसकी उम्मीद अल्लाह से है।

✻ नबी करीम स्व० इर्शाद फरमाते हैं: सबसे जल्दी जिस चीज का सवाब पहुंचता हैं वो नेकी करना और रिश्तेदारी निभाना है। और सबसे जल्दी जिनका आजाब आता है , वो बगावत और रिश्तेदारी तोडना है।

✻ हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रजि० रिवायत करते है कि रसूल स्व० से सवाल किया गया : कौनसे आमाल हैं , कौनसे काम हैं जो अल्लाह को सबसे ज्यादा महबूब है ?तो अल्लाह के रसूल स्व० ने उन आमाल के बारे में बताया जो अल्लाह को मेहबूब है और उन लागों के बारे में बताया जो अल्लाह को सबसे ज्यादा पसंद है

१) किसी मुसलमान को खुश कर देना। आपने किसी के साथ कुछ ऐसा किया कि उसका दिल खुश हो गया तो खुद - बखुद उसके दिल से दुआ निकलेगी।

२) या किसी के तक्लीफ को दूर कर देना। कोई बहुत परेशान था और उसके बस में नहीं था के वो अपनी मुश्किल दूर कर सके, लेकिन अपनी अपनी कोशिशों से उसकी तक्लीफ दूर कर दी। तो ये अमल अल्लाह के यहां बहुत काम आनेवाला है।

३) किसी का कर्ज उतार देना, कोई कर्ज के बोझ से लदा हुआ था और अपने गरीबी की वजह से इस बोझ को उतार कर रखने की ताकत नहीं रखता था लेकिन उसका कर्ज माफ कर दें या कर्ज उतरवा दे तो ये अमल अल्लाह को बहुत पसंद है।

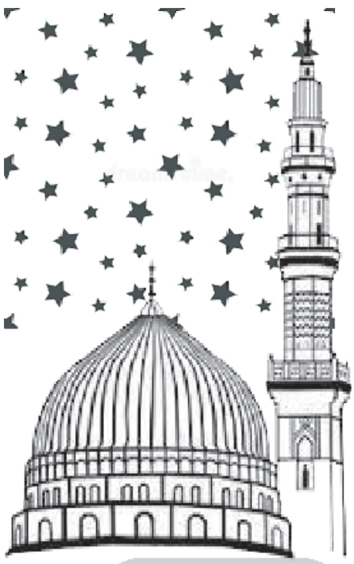
४) किसी के भूक को दूर कर देना, कोई भूका प्यासा है और आपने उसे खिलापिलाकर उसकी भूक मिटा दी तो यकीनन आप अल्लाह के महबूब बन जाओगे।

५) नबी करीम स्व० ने फरमाया मैं किसी मुसलमान भाई के साथ उसकी जायज जरूरत पूरी करने के लिए पहल कर जाऊं तो ये अमल मुझे मस्जिदे नबवी में ऐतकाफ करने से भी ज्यादा है।

✻ अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करे चाहे तुम्हे कत्ल कर दिया जाये या जला दिया जाये।

✻ वालिदैन की नाफरमानी ना करे चाहे तुम्हे वो घर से निकाल दे ।

✻ फर्ज नमाज जान बुझकर ना छोडे।जो शख्स फर्ज नमाज जान बुजकर छोड देता है , अल्लाह का जिम्मा उससे बरी है।





मुसिबते क्यों आती हैं ?

अल्लाह तआला ने इन्सानों को आखिरत की जिन्दगी संवारने के लिए बार–बार होशियार किया और जब भी इन्सान सीधे रास्ते से बहका या अपने मकसद को भूल गया और नज़रंदाज़ कर बैठा जो उसकी तख्लीक का बुनियादी मकसद था तो अल्लाह ने नबियों को भेजा, कौमों के अन्दर जब बुराइयां और गुमराहियां फैल जाती हैं और अल्लाह तआला को नाराज करने वाली बातें हद से ज्यादा बढ़ जाती हैं और उस वक्त उनकी गुस्ताखियों और बदतमीजियों को देखकर महसूस होता है कि अब वह वाक़ई काबिले अजाब हैं और इसी दुनिया में उनकी पिटाई की ज़रूरत है, तो ऐसी सूरतेहाल में अल्लाह तआला नबी को भेजता है, ताकि हुज्रत तमाम हो जाए और किसी को यह कहने का जवाज़ न रहे कि हमें पहले से आगाह नहीं किया गया था और न ही हमें सीधे रास्ते की रहनुमाई की थी। अल्लाह तआला के इल्म में पहले से यह बात जो लोग मानने वाले नहीं हैं, वह बेसते नबी की हुज्रत तमाम होने के बाद भी नहीं मानेंगे, लिहाजा उनको सज़ा का मुस्तहिक फिर भी करार पाना है, लेकिन अल्लाह तआला का हर काम जाहिरी निजाम के साथ करता है, इसीलिए उसने नबियों को भेजा और उन्होंने कौम की इस्लाह में अपनी पूरी उम्र गुजार दी। फिर जब यह बात साबित हो गई कि यह लोग बाज़ नहीं आएंगे तो उसके बाद एक आम शख्स भी यह कह सकता है कि बिलाशुब्हा ऐसे लोग अजाब ही के काबिल हैं, चुनान्चे उसके बाद ही अल्लाह का अजाब नाजिल होता है।

अल्लाह तआला ने बेसते नबवी के साथ यह खासियत रखी है कि रसूलुल्लाह (स०अ०व०) की कौम पर इज्तिमाई अजाब नहीं आएगा, लेकिन रसूलुल्लाह (स०अ०व०) के मुखातिबीन को भी कुरआन मजीद में जगह–जगह मुतनब्बेह किया गया है और पिछली कौमों से दर्से इबरत लेने की बात कही गयी बताया गया कि साबिका कौमों पर अजाब आ चुका है इसलिए कि कौम के हालात खराब होते हैं तो उस पर अल्लाह का अजाब आता है लिहाजा अगर तुमने हमारी और हमारे नबी की बात नहीं मानी तो तुम पर भी यह अज़ाब नाज़िल हो सकता है। लेकिन यह बात अल्लाह तबारक व तआला के इल्म में थी कि यह लोग आखिर में इस्लाम कुबूल कर लेंगे और उस हद तक नहीं जाएंगे जिस हद तक पिछली कौमें चली गयीं थीं जिन्होंने मोजज़ात का मज़ाक उड़ाया था, जैसे कौमे समूद जिसने न कि नाकह को जिहब कर दिया या फिर दूसरी वह कौमें जिन्होंने हर मोजजे का इनकार किया और हठधर्मी अख्तियार की, जब इन्होंने नबियों को इतना तग कर दिया कि इनको

बख्शने का कोई मौका नहीं रह गया तब अल्लाह तबारक व तआला ने इनके ऊपर अजाब भेजा। अल्लाह तआला का तरीका यह है कि वह यकबारगी कोई बड़ा अजाब नहीं भेजता बल्कि पहले छोटे–छोटे अजाब देता है, जिसकी गरज यह होती है कि बन्दे मुतनब्बेह और होशियार हो जाएं। छोटे अज़ाब का मकसद यह बताना होता है कि अगर तुमने अपनी इस्लाह नहीं की तो किसी बड़े अजाब में मुलिला हो सकते हो। इसीलिए हम पहले ही तुमको मुतवज्ञे कर रहे है। और यह भी अल्लाह का अपने बन्दों पर रहम व करम है कि वह बन्दों को मुतवज्ञह कर देता है। जैसे कोई बड़ा शख्स बच्चे की गलती पर उसको तमाचा मार देता है ताकि वह आइन्दा गलती न करे और इसकी कोई बुरी आदत न पड़ जाए्। ठीक उसी तरह अल्लाह तबारक व तआला बन्दों को तकलीफ में मुब्तिला करता है और उसका मंशा यह होता है कि यह बन्दा अच्छा है तो उसका अंजाम भी अच्छा होना चाहिए। यही वजह है कि इसको तकलीफो में डालता है ताकि वह मुतनब्बेह हो जाए और अपनी जिन्दगी की इस्लाह कर ले।

कई बार अल्लाह तआला छोटी–छोटी मुसीबतें और तकलीफें इसलिए देता है ताकि एक अच्छे बन्दे को गैर मामूली अर्ज हासिल हो सके और वह आखिरत में उनके बदले बड़ा फायदा उठाए। उस वक्त आदमी यह तमन्ना करेगा कि ऐ काश दुनिया में हमको और ज्यादा तकलीफें मिली होती तो हमको यहां मजीद बेहतर अर्ज हासिल होता। यही वजह है कि जब बुजुर्गाने दीन तकलीफ़ों में मुब्तिला होते हैं तो अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और उसको सजा नहीं समझते बल्कि यह तसव्वुर करते हैं कि अल्लाह तआला को उनकी कोई ऐसी बात पसंद आ गयी है जिसके नतीजे में वह आखिरत की जिन्दगी के अन्दर उनके दरजात बढ़ाना चाहता है ताकि वहां का जखीरा बढ़ जाए और वह खूब फायदा उठाएं तो हम इससे भी इनकार नहीं कि जब तकलीफ हो तो आदमी को डरना चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं कि यह तकलीफ़ एक सजा और तम्बिया के बतौर हो इसीलिए आदमी को सोचना चाहिए कि कहीं हमसे कोई गलती तो सरजद नहीं हुई है। इस तसव्वुर में बाज़ लोग तो इतने ज्यादा हस्सास होते हैं कि वह अपनी हर तकलीफ से मुताल्लिक यही सोचते हैं कि वह उनके किसी गुनाह की सजा है। फिर जब वह अपनी गलती तलाश करते हैं तो उनको समझ में भी आ जाता है कि यह सजा हमारे फलां गुनाह की हो सकती है। और फिर वह फौरन नदामत के साथ तौबा कर लेते हैं। अजगर्ज आदमी को अल्लाह से डरते रहना चाहिए, पता नहीं अल्लाह को कौन सी चीज़ नापसंद हो जाए और हम उसकी सज़ा के मुस्तहिक करार पाएं।

कई बार अल्लाह तआला का अजाब किसी ऐसी बात पर नाजिल हो जाता है जो बजाहिर मामूली लगती है लेकिन वह अल्लाह की शान के खिलाफ बात होती है। तो ऐसी बात पर अल्लाह का अजाब फौरन नाज़िल हो जाता है और आदमी की सजा हो जाती है। जैसा कि सूरह कहफ़ में मौजूद दो बाग वालों के किस्से से पता चलता है कि जिसमें एक शख्स को एक नामुनासिब जुमला बोलने की वजह से बड़ी सजा से दो–चार होना पड़ा और आन की आन में उसके सब बागात ख़त्म कर दिये गए। इससे साबित होता है कि अगर आदमी अल्लाह के मामले में बेएहतियाती करेगा या कोई नामुनासिब रिमार्क करेगा तो उसकी गिरफ्त फौरन हो जाएगी। लेकिन आम गुनाहों पर फौरन सज़ा नहीं होती बल्कि उनका हिसाब–किताब आखिरत में होगा। इस दुनिया में आदमी जो भी गुनाह करेगा तो उसकी सज़ा आखिरत में होगी। फौरी तौर पर बस उसी गुनाह की सजा होती है जिससे अल्लाह तआला की शान में गुस्ताखी हो या वह तकब्बुर और बदतमीजी वाली बात हो। इन्सानों के ऊपर जो छोटी–छोटी मुसीबतें आती हैं यह हकीकत में अल्लाह तआला की तरफ से मुतवज्ञेह करने के लिए ताजियाने होते हैं। उल्मा कहते हैं कि जो मुसीबत आती है उसकी तीन शक्लें होती हैं या तो वह तम्बीया होती है या अज़ाब होता है और या फिर वह नेक लोगों के दरजात में इजाफे का जरिया होती है। अल्लाह तआला इन्सानों को बीमारी में इसलिए मुब्तिला करता है ताकि उसका अज्र मिल

जाए। हदीस में है कि कयामत के दिन जब मुसीबतों पर सब्र का अज मिलना शुरू होगा तो आदमी यह तमन्ना करेगा कि ऐ काश दुनिया में हमें और ज्यादा तकलीफ हुई होती लेकिन बाज़ मर्तबा तम्बीह के लिए भी इन्सान के ऊपर मुसीबतें आती हैं। अल्लाह तआला याद दिलाता है कि तुम गलत कर रहे हो और इस अमल से तुमको बड़ी मुसीबत पेश आ जाएगी यानि हम तुमको उसकी वजह से बड़ी सज़ा देंगे।

फ़िरऔन के ऊपर जो मुसीबतें आयीं वह उसकी तम्बीह की खातिर ही थीं। अल्लाह तआला ने मुख्तलिफ मुसीबतें भेजीं, कभी मेढक बढ़ गए, वह हर जगह कूदते नजर आ रहे थे। खाने में घुस जाते और कभी पानी के गिलास में आ जाते, यहां तक कि लोग बिल्कुल आजिज़ आ गए थे। इसी तरह खून बहुत फैल गया था और खटमल बहुत बढ़ गए थे। अल्लाह तबारक व तआला ने इरशाद फरमाया कि यह सब अजाब की शक्लें थी। अल्लाह तआला ने इस को छोटी छोटी मुसीबतें दी थीं कि होशियार हो जाओ और ईमान ले आओ, मगर फिरऔन यह करता था कि जब बहुत आजिज आ जाता था तो हजरत मूसा अलैहिस्सलाम से दरख्वास्त करता था कि तुम अगर अपने अल्लाह से कहकर हमारी यह मुसीबत टाल दो तो हम यकीनन ईमान ले आयेंगे। चुनान्चे हजरत मूसा अलैहिस्सलाम दुआ करते थे कि और वह मुसीबत टल जाती थी लेकिन फिरऔन की अकड फिर भी वैसी ही रहती थी। इसलीए दोबारा मुसीबत आ जाती थी गरज कि उसी तरह मुसलसल सात मुसीबतें आयी लेकिन फिर भी जब वह न समझा तो अजाबे इलाही ने आ पकडा।

******



हज इस्लाम को पांचवा रुकन है हज ९ हिजरी में फर्ज हुआ जो शख्स बैतुल्लाह तक जाने और खर्च बरदाशत करने के काबील हो उस पर जिंदगी में एक मर्तबा हज फर्ज़ है हजे मबरुर का बदला जन्नत है हज तमाम गुनाहो का कफफारा है ।

✻ हज की तीन किस्में ✻

(१) **इफराद** : जिस में हज की निय्यत से अहराम बांधा जाए और हज के तमाम अरकान अदा कर के दसवी ज़िलहज्ज़ा को मनी में अहराम खोल दीया जाए इस पर कुर्बानी वाजीब नही

(२) किरान: जिसमें हज और उमरा दोनो का अहराम एक साथ ही बांधा जाए और उमरा के बाद अहराम ना खोला जाए जब तक दंसवी तारीख को कुर्बानी और तवाफ ज़ियारत से फारीग ना हो जाए और इस पर कुर्बानी का जानवर ज़रुरी है

(३) तमातउ: जिस में मियाकत से सिर्फ उमराह का अहराम बांध कर आए और उमरा कर के अहराम खोल दे और आठवी जिलहज्ज़ा को दोबारा हज के लिए अहराम बांधे और हज के तमाम अरकान अदा कर के हज पुरा करे यही हज अफज़ल है.

✻ हज में तीन बातें फर्ज़ है ✻

(१) अहराम यानी हज की दिल से निय्यत करना और तलबिया(लब्बैक) पढना।

(२) वुकूफे अरफा करना, यानी ९ ज़ीलहज्ज़ा को ज़वाल आफताब के वक्त से १० ज़ीलहज्ज़ा की सुबह सादिक तक अरफात में किसी वक्त ठहरना अगरचे एक लम्हा ही हो।

(३) तवाफे ज़ियारत करनाः यानी १०जीलहज्ज़ा की सुबह से १२वी ज़ीलहज्ज़ा (की अस्र) तक के वक्त मे काबतुल्लाह का तवाफ करना। हुक्मःअगर इन तीनो फर्ज़ों में से कोई एक अमल भी छुट जाए तो हज सही न होगा।

✻हज मे छः वाजिबात हैं : ✻

(१) मज़दलफा मे ठहेरना

(२)सफा मरवा की सई करना

(३)रमी जमरात करना यानी शैतानों को कंकरियाँ मारना

(४) कारीन और तमत्तो को कुरबानी करना

(५)बाल कतरवाना

(६) तवाफे विदाअ करना

✻ हज की नौ सुन्नतें ✻

(१) कारोन और आफाकी मुफरद को तवाफे कुदूम करना।

(२) ईमाम का तीन मकाम पर खुत्बा पढना। (अ)सातवी ज़िलहज्ज़ा को मक्का मुकरमा मे (ब)नव्वी ज़िलहज्ज़ा को अरफात में (क) ग्यारवी ज़िलहज्ज़ा को मिना में

(३) नव्वी ज़िलहज्ज़ा की रात को मिना में रहना

(४)नव्वी ज़िलहज्ज़ा को तुलुअ आफताब के बाद अरफात जाना

(५)अरफात से वापस ईमाम के चलने के बाद चलना

(६)अरफात से वापस होते हुए मुज़दलफा मे रात को ठहरना

(७)अरफात मे गुस्ल करना

(८)अय्यामे मिना मे रात को मिना में रहना

(९) मिना से वापसी में ठहरना अगरचे एक लम्हा ही हो।

✻ उमराह के दो फर्ज़ ✻

(१)अहराम के लिए निय्यत करना और तलबीया पढना फर्ज़ है लेकिन तलबीया आहिस्ता पढे।

(२)तवाफ के लिए सिर्फ निय्यत फर्ज़ है।

✻ उमराह के दो वाजिबात✻

(१) सफा व मरवा के दर्मियान सई करना (सई मे न दौडें)

(२)सर के बाल कतरवाना

✻ अहराम ✻

सिर्फ दो चादरें बांध लेने से आदमी मोहरिम नही हो जाता, बल्के हज की दिल से निय्यत कर के ज़बान से तलबीया और कोई ज़िक्र जो काएम मुकाम तलबीया के हो पढना ज़रुरी है। एक मर्तबा तलबिया पढना वाजिब है, और तीन मर्तबा पढना सून्नत है, और ज़्यादा पढना मुस्तहब है। अहराम के लिए गुस्ल भी सुन्नत है बगैर गुस्ल या वजू के अहराम बांधना मकरुह है। दो रकअत नफिल पढना (अगर मकरूह वक्त ना हो तो) मस्नुन है।

✻तवाफ के तीन अरकान ✻

(१)तवाफ के अकसर चक्कर (यानी चार) पुरे करना

(२) बैतुल्लाह के बाहर मस्जिद के अंदर तवाफ करना

(३)खुद तवाफ करना, ख्वाह किसी चीज़ पर सवार होना पढे।

✻ तवाफ की तीन शर्ते ✻

(१) खास वक्त

(२) तवाफ से पहले अहराम

(३) वुकूफे अरफा का होना.

✻ तवाफ के आठ वाजिबात ✻

(१)तहारत यानी हदसे असगर (बेवजू होना) और हदसे अकबर (यानी हैज़ व निफास और जनाबत) से पाक होना।

(२)सतर औरत

(३) पैदल चलने पर कुदरत रखने वाले को पैदल तवाफ करना

(४)अपनी दाहिनी जानिब से तवाफ शुरु करना (५) हतीम को शामिल कर के तवाफ करना

(६) हजरे अस्वद से शुरु करे

(७)पुरा तवाफ करना (यानी चार चक्कर के बाद तीन चक्कर करना)

(८)तवाफ के बाद दो रकअत नमाज़ पढना वाजिब है.

✻ सई की छःशर्ते :✻

(१) खुद सई करे अगरचे किसी के ऊपर चढकर या किसी सवारी पर सवार हो कर करना पढे। (यानी दूसरे को नाएब बना कर सई । करवाना दुरुस्त नहीं)

(२) तवाफ पुरा करने या अकसर तवाफ करने के बाद

३) हज या उमराह का अहराम सई पर मुकद्दम होना, अहराम से पहले सई सही न होगी यानी अगर हज की सई है (ख्वाह किसी किस्म का हज हो) और अगर वुकूफे अरफा से पहले सई कर रहे है तो अहराम की हालत में सई का होना शर्त है। अगर वुकूफे अरफा के बाद सई करे तो अहराम ना होना मसनुन है

(४)सई सफा से शुरु करे मरवा पर खत्म करे

(५)सई का अकसर हिस्सा पुरा करने (यानी सात चक्कर मे से चार चक्कर करना) अगर अकसर ना किया तो सई ना होगी

(६)सई के वक्त में सई करना. हज की सई के लिए शर्त है। उमरा की सई के लिए शर्त नही।

✻सई के छः वाजिबात ✻

(१)सई तवाफ के बाद हो (ऐसा तवाफ जो । जनाबत या हैज़ की हालत में किया हो)

(२)सई सफा से शुरु करना मरवा पर खत्म । करना

(३) अगर कोई उन ना हो तो पैदल सई करना (बिला उज्र सवार हो कर करने । से दम वाजिब होगा)

(४)सात चक्कर पुरे करना भी वाजिब है यानी चार चक्कर फर्ज़ । है बाकी तीन वाजिब है।

(५) उमराह की सई मे उमराह का अहराम सई के आखिर तक बाकी रखना।

(६) सफा व मरवा के दर्मियान की पुरी मसाफत तए करना।

✻✻✻✻✻✻✻



कुरबानी क्यूं करते हैं?

कुरबानी हुक्मे खुदावन्दी पर अमल करने के लिये की जाती है

सुवाल : हम कुरबानी क्यूं करते हैं ?

जवाब : कुरबानी का हुक्म अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल स० ने दिया है और येह चन्द शराइत के साथ मुसल्मान पर वाजिब होती है इस लिये हम कुरबानी करते हैं और इन्शाअल्लाह करते रहेंगे। अल्लाह पाक ने कुरबानी का हुक्म देते हुए कुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाया : (पारा नं ३०: अलकौसर:२) तरजमए कन्जुल ईमानः '' तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो और कुरबानी करो।'' तो इस हुक्मे खुदावन्दी पर अमल करने के लिये हम कुरबानी करते हैं। इस आयते मुबारका में भी कुरबानी का ज़िक्र है:(१६२:अलइनआम पारा नं८) तरजमए कन्जुल ईमान : ''तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी कुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिये है जो रब सारे जहान का।'' इसी तरह जब नबिय्ये करीम स्व० की बारगाह में सहाबए किराम रजि० ने अर्ज की, कि येह कुरबानियां क्या हैं ? तो आप स० ने इर्शाद फ़रमाया : (या'नी कुरबानी करना) तुम्हारे बाप इब्राहीम अलै० का तरीकाए कार है। (३१२७:३०.५३१/३इब्ने माजा) एक और हदीसे पाक में है : जो कुरबानी की वुस्अत रखता हो और कुरबानी न करे तो वोह हमारी ईदगाह के करीब न आए। (३१२३:२०.५२९/३२इब्ने माजा)

कुरबानी किस पर वाजिब है?

सवाल : कुरबानी करना किस पर वाजिब है? जवाब : १० जुल हिज्ज़तिल हराम की सुब्हे सादिक़ से ले कर १२ जुल हिज्ज़तिल हराम के गुरूबे आफ्ताब के दरमियान अगर कोई मुसल्मान आकिल, बालिग, मुकीम और साहिबे निसाब हो और वोह निसाब उस के कर्ज और ज़रूरिय्याते जिन्दगी में मुस्तररक (या'नी डूबा हुवा) न हो तो इस सूरत में कुरबानी वाजिब होगी।

क्या मुसाफ़िर पर कुरबानी वाजिब है?

सवाल : क्या मुसाफ़िर पर कुरबानी वाजिब है ? जवाब : जो शरअन मुसाफ़िर है उस पर कुरबानी वाजिब नहीं।

कुरबानी के जानवर की उम्र का ए'तिबार है या दांत निकालने का?

सवाल : क्या ऐसे जानवर की कुरबानी जाइज़ है जो अपनी कुरबानी की उम्र पूरी कर चुका हो मगर उस ने

दांत न निकाले हों? बक़रह ईद के मौके पर ब्योपारी ग्राहकों से कहते हैं कि हमारे इस जानवर ने अगर्चे दांत नहीं निकाले मगर यह अपनी कुरबानी की उम्र पूरी कर चुका है तो गाहक वोह जानवर खरीदने के लिये तय्यार नहीं होते और कहते हैं कि दांत निकालना ज़रूरी है, अगर वोही जानवर ब्योपारी आधी कीमत पर देने के लिये तय्यार हो जाए तो गाहक उसे ख़रीद लेते हैं, उन का ऐसा करना कैसा?

जवाब : जो जानवर कुरबानी की उम्र पूरी कर चुके हों उन की कुरबानी जाइज़ है अगर्चे उन्हों ने दांत न निकाले हों। कुरबानी के जाइज़ होने के लिये ऊंट की उम्र कम अज़ कम पांच साल, भैंस की दो साल और बकरा, बकरी, दुम्बा, दुम्बी और भेड़ की एक साल होना ज़रूरी है। अलबत्ता अगर दुम्बा या भेड़ का छे महीने का बच्चा इतना बड़ा हो कि दूर से देखने में साल भर का मालूम होता हो तो उस की कुरबानी भी जाइज़ है। याद रखिये ! कुरबानी जाइज़ होने के लिये जानवरों की उम्र पूरी होना ज़रूरी है न कि दांत निकालना क्यूं कि जो जानवर आज़ाद घूम फिर कर चरते और नोच नोच कर घास खाते हैं वोह मुसल्सल दांतों से घास खींचते रहने के सबब अपनी कुरबानी की उम्र पूरी होने से पहले ही दांत निकाल देते हैं और जो जानवर बंधे हुए होते हैं वोह बसा अवकात उम्र पूरी होने के बा वुजूद दांत नहीं निकाल पाते । जानवरों की उम्र के मुआमले में लोग ब्योपारियों पर इस लिये ए'तिमाद नहीं करते कि कसरत से झूट और धोका देही के बाइस उन का ब्योपारियों से ए'तिमाद उठ चुका होता है। बा'ज ब्योपारी जानवरों की कटी हुई दुम टेप लगा कर जोड़ देते हैं और जिस रंग के जानवर के बाल होते हैं टेप पर उसी तरह का रंग लगा देते हैं जिस के बाइस खरीदार को येह मा'लूम नहीं हो पाता कि जानवर की दुम कटी हुई है और फिर जब वोह बेचारा उसे घर ले जा कर दुम से पकड़ता है तो दुम निकल कर उस के हाथ में आ जाती है। इसी तरह बा'ज़ ब्योपारी जानवरों के दांत दिखाते हुए भी धोका देही से काम लेते है। अगर्चे सब ब्योपारी धोकेबाज़ नहीं होते मगर लोग ईमानदार ब्योपारियों पर भी इस लिये ए'तिमाद नहीं करते कि दूध का , जला छाछ फूंक फूंक कर पीता है। अगर ब्योपारी बा शअ और नेक आदमी है और वोह कहता है कि जानवर की उम्र पूरी है, गाहक को उस पर ए'तिमाद है कि वोह जानवर की उम्र बताने में झूट नहीं बोल रहा तो इस सूरत में अगर गाहक ने उस से जानवर खरीद कर कुरबानी कर ली तो उस की कुरबानी हो जाएगी अगर्चे दांत न निकले हों। बेहतर येह है कि कुरबानी का जानवर चाहे वोह भैंस हो या बकरा चार दांत का होना चाहिये, बकरा अगर चार दांत का हो तो उस का गोश्त उम्दा होता है मगर हमारे यहां दो दांत की रस्म चल पड़ी है। जानवर खरीदने वाले भी दो दांत का मुतालबा करते हैं और ब्योपारी भी दो दांत की सदाएं लगाते हैं । बसा अवकात जानवर आठ दांत (या'नी बड़ी उम्र) का होता है मगर ब्योपारी खरीदार को सिर्फ दो दांत नुमायां तौर पर दिखाते हैं और बकिय्या दांत अपनी उंग्लियों से छुपा लेते हैं और फिर फौरन जानवर का मुंह बन्द कर देते हैं। रही बात येह कि जिस जानवर के कम उम्री की वज्ह से दांत नहीं निकले होते लोग उसे आधी कीमत में खरीद लेते हैं तो येह आधी कीमत पर खरीदने वाले. शायद गोश्त फ़रोश होते होंगे जो ऐसे जानवरों को कुरबानी के लिये नहीं बल्कि जब्ह कर के उन का गोश्त बेचने के लिये ख़रीद लेते होंगे।

जानवर दो दांत का है या ज़ियादा का, यह पहचान कैसे हो?

सवाल : जानवर दो दांत का है या ज़ियादा का, इस की पहचान कैसे की जा सकती है?

जवाब : जानवर दो दांत का है या ज़ियादा का, इस की पहचान येह है कि जो दांत अच्छी तरह नहीं निकले होते वोह सारे छोटे से एक लाइन में सफेदी की तरह नज़र आते हैं और जो दांत निकल चुके होते हैं वोह उस सफेदी से थोड़ा हट कर उभरी हुई जगह से निकलते हैं और चौड़े होते हैं और उन पर कुछ पीलाहट सी होती है। अगर जानवर आठ दांत का

बिल्कुल ज़ईफ़ है तो उस के आठों दांत एक ही लाइन में नज़र आएंगे और उन पर पीलाहट भी दिखाई देगी। बहर हाल जानवर के दांतों की पहचान हर एक नहीं कर सकता लिहाज़ा जानवर खरीदते वक़्त तजरिबा कार आदमी का साथ होना बहुत मुफीद है।

बड़े जानवरों को छोटी गाड़ियों में घुसा कर लाना कैसा ?

सवाल : कुरबानी के जानवरों को मन्डी से खरीद कर घर लाने के लिये गाड़ियों की ज़रूरत पड़ती है, बा'ज़ लोग पैसे बचाने के लिये बड़े जानवरों को भी छोटी गाड़ियों में जबर दस्ती घुसा कर, लिटा कर और रस्सियों से बांध कर लाते हैं जिस की वज्ह से जानवरों को बहुत तक्लीफ़ होती है और बसा अवकात वोह शदीद ज़ख्मी भी हो जाते हैं ।

जवाब : जिस तरह इन्सान को तक्लीफ़ देह चीज़ों से अज़िय्यत पहुंचती है और वोह अपने आप को उन से बचाने की कोशिश करता है ज़ाहिर है इसी तरह जानवरों को भी तक्लीफ़ देह चीज़ों से अज़िय्यत होती है। चन्द पैसों की ख़ातिर इस तरह बड़े जानवरों को छोटी गाड़ियों में जबर दस्ती घुसा कर, लिटा कर और रस्सियों से बांध कर लाना बिला वज्ह जानवरों को ईज़ा देना और उन पर जुल्म करना है। जानवर पर जुल्म करना मुसल्मान पर जुल्म करने से भी सख्त तर है क्यूं कि मुसल्मान तो मुकाबला करेगा, अदालत में जा कर केस कर देगा इस के इलावा और बहुत कुछ कर सकता है। लेकिन येह बे ज़बान जानवर किस के आगे फ़रियाद करेगा। याद रखिये ! मज्लूम जानवर बल्कि मज्लूम काफ़िर की भी बद दुआ कबूल होती है। जिन्हों ने ऐसा किया है वोह तौबा करें और आयिन्दा हरगिज़ इस तरह के अन्दाज़ इख़्तियार न करें ।

कौन से दिन कुरबानी करना अफ़्ज़ल है ?

सुवाल : ईद के कौन से दिन कुरबानी करना अफ़्ज़ल है ?

जवाब : ईद के तीनों दिन कुरबानी करना जाइज़ है अलबत्ता पहले दिन कुरबानी करना अफ्ज़ल है। ईद के पहले दिन उमूमन क़स्साब ज़ियादा पैसे लेते हैं तो बा'ज़ लोग थोड़े से पैसे बचाने के लिये अफ़्ज़ल अमल को छोड़ कर ईद के दूसरे या तीसरे दिन कुरबानी करते हैं। यूं चन्द पैसों की खातिर इतना महंगा जानवर लाने के बा वुजूद पहले दिन कुरबानी करने की फ़जीलत पाने से खुद को महरूम कर देते हैं। पहले दिन कस्साब का ज़ियादा रकम लेना अगर्चे नफ्स पर गिरां गुज़रता है मगर हमें अपना यूं जेह्न बनाना चाहिये कि जो नेक अमल नफ़्स पर जितना जियादा गिरां गुजरता है उस का सवाब भी उतना ही जियादा अता किया जाता है।

****



हजरत फातीमा रजि. को सख्त डाट कि कब्रिस्तान चली जाती तो जन्नत से महरुम हो जाती

उर्स में और मजारों पर जाने वाली औरतोंपर खुदा और रसूल सल्ल. की लानत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रजि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से (जबकि वह बाहर से आ रही थीं और आप सल्ल० से मुलाक़ात हो गई) पूछा, घर से क्यों निकली थी, कहा कि फ़्लां मय्यत में गई थी कि उनके लिए रहमत व मग्फ़िरत की दुआ कर दूं और उनके घर वालों को तसल्ली दे दूँ आप सल्ल० ने पूछा कि शायद क़ब्रिस्तान भी गई थी। जवाब दिया, खुदा की पनाह! कि में क़ब्रिस्तान जाऊँ, जबकि मैं आप सल्ल० से (क़ब्रिस्तान जाने के बारे में सख्त वईद) इस इस तरह सुन चुकी हूँ जो आप सल्ल० ने बयान किया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तू उनके साथ क़ब्रिस्तान जाती तो 'जन्नत देख भी न सकती थी (दाखिल होना तो दूर की बात) यहां तक कि तेरे बाप के दादा न देख लेते।खुदा की पनाह! औरतों को मज़ारों और क़ब्रिस्तान जाने की कितनी सख्त वईद है कि आप सल्ल० ने अपनी लाडली ही हज़रत फ़ातिमा रजि० से फ़रमा दिया कि अगर क़ब्रिस्तान जी तो जन्नत से महरूम हो जाती। भला हज़रत फ़ातिमा रज़ि० नेक सीरत सालिहात (नेक लोगों) की पेशवा, जन्नत की बार जब आप सल्ल० से इसके बारे में पहले ही वईद सुन चुकी तो इस न करने वाले काम को कैसे कर सकती थी। हज़रत इब्ने अब्बास रजि० से रिवायत है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन औरतों पर लानत फ़रमाई जो क़ब्रों पर जाने वाली हैं। हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि० से मरवी है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मज़ारात पर जाने वाली औरतों पर लानत फ़रमाई है। हज़रत अबू हुरैरह रजि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मज़ारों पर जाने वाली औरतों पर लानत फ़रमाई है।

औरतों को मजारोंपर जाने से आप स० ने सख्ती से मना फरमाया है, औरतें कमज़ोर दिल वाली होती हैं। शैतान नफ़्स क जाल व फरेब में बहुत जल्द गिरफ्तार हो जाती है। मजारात पर उनका आना जाना बुरी अक़ीदत और शिर्किया कामों की वजह हो जाएगा। उनकी इज़्ज़त, पाकदामनी और पर्दे का जनाज़ा निकल जाएगा। वे शरई हुदूद को हरगिज़ बाक़ी न रख सकेंगी। एक खेल तमाशा बन जाएगा।

इस वजह से शरीअत ने सख्ती से रोका है और इसे लानत की वजह क़रार दिया है। औरतों पर नफ़्स और शैतान का गल्बा जल्दी हो जाता है। इब्रत व नसीहत के बजाए ख्वाहिशाते नफ्स का रुख जल्दी उनमें दाखिल हो जाता है। इसी वजह से तो शरीअत ने

औरतों के लिए जमाअत की शिरकत मशरूअ नहीं की और घर में पढ़नेका हुक्म दिया।

इस मुमानअत और सख्ती से मना करने के बावुजूद मज़ारात पर और उर्स के मौके पर औरतें किस कसरत से जाती हैं अल्लाह की पनाह। बुजुर्गों के मशहूर मज़ारात लाहौर, दिल्ली, कलियर, अजमेर, गुलबर्गा, कछोछा वगैरह में जाकर देखिए। औरतें किस क़द्र बेहयाई, फहाशी बेपर्दगी का मुज़ाहरा करती है। किस तरह बन संवरकर फैशन कर के मज़ारात पर इज़्ज़त का जनाज़ा निकालती हैं कि एक शरीफ आदमी वहां ईसाले सवाब के लिए जाने में आना कानी करता है।

सर खोले हुए बाल लटकाए हुए वहाँ हुस्न का मुजाहरा करती हैं वे ऐसी हैं जैसे ज़िना की दावत देती हैं अल्लाह की पनाह। इबररत की जगह में फैशन और सजना संवरना और बेपर्दगी का मुजाहरा क्यों करती है। जिस तरह आज़ाद शादी ब्याह में नाच गाने बेहयाई का मुज़ाहरा होता है इसी तरह उन बुज़ुर्ग और मुक़द्दस हस्तियों के मज़ारात पर बेशर्मी का मुज़ाहरा करती हैं।

इसी वजह से आप देखेंगे कि ये मज़ारात जो मारिफ़त और इब्रत की जगह थे, खेलकूद की जगह और आवारा लोगों के अड्डे बन गये हैं। इसी अजमेर और लाहौर, दिल्ली वगैरह उर्स के मौके पर बसों और गाडीयों में मर्दो से ज़्यादा नहीं तो कम भी नहीं औरतों की तादाद होती है। अकसर नई उम्र की जवान औरतें बेपर्दा फैशन व बेहयाई का मुज़हरा करती हुई जाती हैं, क्या इस तरह बेहयाई, बेपर्दगी के साथ यह मज़ारों पर इब्रत के लिए जाती हैं हरगिज़ नहीं। इन औरतों की भीड़ में फ़ासिक़, फाजिर लोग होते है।

सफ़र में हरगिज़ शरई पर्दा बाक़ी नहीं रह सकता। शरीअत ने औरतों के मिज़ाज को समझा, इसी वजह से पहले ही बन्दिश लगा दी कि मज़ार पर जाने वालीं खुदा और रसूल सल्ल० की लानत में गिरफ्तार होती हैं। अफ़सोस कि जहालत की वजह से उसे नेक काम और इबादत का काम समझती हैं। हालांकि अपने आपको जहन्नम में झोंकती हैं। कहीं कहीं तो यहां तक देखा गया है कि जिस तरह हज्ज–ए–बैतुल्लाह के लिए सालों रुपया जमा करते हैं और ज़ियारत–ए–बैतुल्लाह की तमन्नाओं में एक मुद्दत आशिक़ाने इलाही गुजारते हैं इसी तरह से जाहिल मर्द और औरतें लाहौर, दिल्ली और ख़ासकर अजमेर के उरी में शिरकत के लिए रकम जमा करते हैं और तमन्ना करते हैं और इसे मगफिरत की वजह और निजात का सबब समझते है। इस लानत पर माल का लगाना ऐसा है जैसे माल ख़र्च करके लानत को ख़रीदना और हासिल करना। जिसको रसूलुल्लाह सल्ल० ने लानत की वजह क़रार दिया।

जिस काम पर खुदा और रसूल की लानत भला उस पर जान व माल का ख़र्च करना निजात की वजह और सवाब की वजह हो सकता है। अफ़सोस कि आज मिज़ाज ही बदल गया है। बे दीनी की बातों को दीन समझकर करने लगे। इस्लाह और तौबा की उम्मीद हो सकती है। उर्स और मज़ारात पर भीड़ भाड़ क़व्वाली, सिमा वगैरह यह सब गुनाह है और इसके सफर करना और जाना गुनाह है। ज़रा सोचिए अगर मज़ारों पर उर्स करना सवाब का काम होता तो मदीना–ए–तय्यबा में सरकारे दो–आलम सल्ल० के मज़ारे मुक़द्दस पर और सिद्दीक़े अकबर रजि०, उमर फ़ारूक़ रजि०, जलीलुल क़द्र सहाबा किराम रजि० के मज़ारात पर उर्स होता।

इसी तरह हज़रात अंबियाए किराम अलैहि० के मज़ारात पर भी उर्स का इन्तिज़ाम होता। आप सल्ल० इसका हुक्म फ़रमाते। हज़रात सहाबा किराम रजि० के ज़माने में इस पर अमल होता। खैरुल कुरून जिसमें नेकी के गल्बे की आप सल्ल० ने गवाही दी उन कामों पर अमल होता। जब ये बातें नहीं तो मालूम हुआ कि ये सब दीन की बातें नहीं बल्कि जाहिलों की गढ़ी हुई बातें है। क़बाहतों (बुराईयों) से ख़ाली होने की सूरत में सिर्फ इब्रत के लिए मर्दो को तो इजाज़त हो भी सकती है मगर औरतों को तो किसी सूरत में जायज़ ही नहीं, हराम है।

****



रुस-युक्रेन युद्ध : दृश्य-परिदृश्य

१९१७ ई० में कम्यूनिस्ट क्रान्ति (बालश्वेक) ने दुनिया का इतिहास बदल दिया था। इस क्रान्ति के गर्भ से १५ विभिन्न लोकतन्त्र पर आधारित सोशलिस्ट गणराज्य का उदय हुआ जिसमें लगभग १०० राज्यों के लोग शामिल थे जो ज़मीन के छटे हिस्से के मालिक थे। १९२२ई० में लेनिन के नेतृत्व में दूर-दराज के राज्यों को रूस में शामिल किया गया और सरकारी तौर पर यू.एस.एस.आर. की स्थापना हुई। सोवियत यूनियन की अर्थव्यवस्था कार्ल मार्क्स के आर्थिक नियमों पर आधारित थी। यह अर्थव्यवस्था पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर लागू की जाती थी, तथा राष्ट्र की अधिकतर आबादी को सख्ती के साथ कृषि तथा औद्योगिक कार्यों में लगाया जाता।

बीसवीं सदी सोवियत यूनियन के उत्थान की सदी थी; इतिहास, अर्थव्यवस्था, शिल्पकारी तथा विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में उसी का सिक्का चलता था। अंतरिक्ष में पहला सेटेलाइट भी उसी ने भेजा तथा पहला मनुष्य भी राजनीतिक मोर्चे में उसने हिटलर को परास्त किया। वियतनाम तथा क्यूबा की क्रान्ति में महत्वपूर्ण किरदार निभाया तथा एटमी शक्ति की दौड़ में भी आगे-आगे रहा। सन सोवियत यूनियन को ताक़त तथा उसकी उन्नति को चैलेंज देने वाली दूसरी महान शक्ति सयुंक्त राष्ट्र अमेरिका की थी लेकिन संयोग की बात कि दुसरे विश्वयुध्द में सोवियत युनियन तथा अमेरिका का संयुक्त शत्रु जर्मनी था, इसलिए यह दोनों शक्तियां एक ही पक्ष में शामिल थीं, लेकिन जब अमेरिका ने सोवियत यूनियन की मर्जी को शामिल करते हुए बगैर जापान पर एटमी हमले किये तो इस एकता में जबरदस्त दरार पड़ गयी, फिर यह दरार युद्धबंदी के बाद नवनिर्माण को लेकर और बढ़ती गयी जिसका आधार उनकी राजनीतिक व आर्थिक विचार थे।

विश्वयुद्ध में विजयी शक्तियों के मध्य जर्मनी के बंटवारे को लेकर भी जबरदस्त मतभेद प्रकट हए तथा पश्चिमी दुनिया दो विभिन्न गिरोहों में बंट गयी, एक सोवियत यूनियन की अध्यक्षता वाला कम्यूनिस्ट तथा दूसरे पूंजीवादी जिस पर अमेरिका का वर्चस्व था। साम्यवाद तथा पूंजीवाद के मतभेद के साथ ही दुनिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सोवियत यूनियन तथा अमेरिका सहित मित्र देशों में बंट गया। यह दोनों देश १९४५ ई० से लेकर १९९१ ई० तक निर्माण व उन्नति के विभिन्न क्षेत्रों में तथा असलहों की प्राप्ति में एक दूसरे के बड़े दुश्मन रहे। इस लम्बे अर्से में उनके मतभेद, विरोधाभास तथा लड़ाई को शीत युद्ध (कोल्ड वार) का नाम दिया जाता है। कुछ दहाइयों में शीत युद्ध का दायरा यूरोप तथा दुनिया के हर क्षेत्र में फैल गया। अमेरिका ने सोवियत यूनियन की ताकत को सीमित करने के लिए विशेषतयः पश्चिमी यूरोप, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में कई देशों से गठबंधन स्थापित किया। ९१९४९ ई० में अमेरिका ने सोवियत यूनियन के बढ़ते प्रभाव और यूरोप की ओर विस्तार के खतरे को ध्यान में रखते हुए एक आगानाइजेशन की बुनियाद रखी जिसमें अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा, फ्रांए पुर्तगाल, इटली इत्यादि लगभग बारह देश शामिल हुए। इसके जरिये सदस्य देशों के संयुक्त रक्षा हेतु राजनीतिक व सैन्य गठबंधन स्थापित हुआ, इस आर्गानाइजेशन को नै टो (नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनायझेशन) कहा जाता है

जिसमें इस समय तीस सदस्य शामिल हैं।

नैटो की धारा ५ के अनुसार सभी सदस्य इस बात पर सहमत हैं कि यूरोप या उत्तरी अमेरिका में से किसी भी देश पर होने वाला हमला तमाम देशों पर हमला माना जाएगा तथा समस्त सदस्य इस बात पर भी सहमत हैं कि ऐसे किसी भी हमले की स्थिति में सभी सदस्य संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के आर्टिकल ५१ के अनुसार अपने व्यक्तिगत तथा संयुक्त रक्षा अधिकारों का प्रयोग करते हुए उस देश की सहायता करेंगे जिस पर हमला हुआ होगा। लगभग पचास साल के शीत युद्ध के दौरान कई बार ऐसे विवाद भी पैदा हुए जो दुनिया को विश्र्वयुद्ध के दहाने पर ले आए जिनमें बर्लिन नाकाबन्दी (१९४८ ई०–१९४९ ई०) कोरिया का युद्ध (१९५० ई०–१९५३ ई०) वियतनाम का युद्ध (१९५९ ई०–१९७५ ई०) क्यूबा मिसाइल संकट (१९६२ ई०) तथा सोवियत–अफगान युद्ध (१९७९ ई०–१९८९ ई०) चर्चा योग्य हैं। सोवियत यूनियन के खिलाफ़ अमरीका के शीतयुद्ध, नैटो की घेराबंदी तथा आन्तरिक व बाह्य कारणों पर ध्यान दिये बगैर विभिन्न राष्ट्रों पर तानाशाही के साथ शासन करना तथा साम्यवाद की असंतुलित व्यवस्था में उनको ढालने का प्रयास करना शासन की चूलें हिला देने के बराबर था। अतः जल्द ही देश की राजनीतिक पकड़ ढीली हुई, अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई तथा १९८० ई० में अमेरिका को टक्कर देने वाले देश की जी.डी.पी. अमेरिका के आधी रह गयी। २५ दिसम्बर १९९१ई० को सोवियत यूनियन के प्रमुख मीखाइल गोरबाचोफ ने अपनी नाकामी को स्वीकार करते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया तथा अपने अधिकार रूसी फेडरेशन के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति बोरिस येलसिन के हवाले कर दिये। उस रात हथौड़े और दंराती के चिन्ह के साथ सोवियत यूनियन का लाल झंडा क्रीमान से नीचे उतारा गया और उसकी जगह रूसी तिरंगा लहराने लगा। सोवियत यूनियन का खात्मा दुनिया का सबसे बड़ा भौगोलिक बदलाव था। सोवियत यूनियन के अचानक खात्मे ने पूरी दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया। यह एक महान साम्राज्य था जिसने सत्तर सालों तक विभिन्न मित्र देशों को अपने नियन्त्रण में रखा था और अपना राजनीतिक वर्चस्व पूरी दुनिया में फैलाया था। यह बिखराव इतना बड़ा था कि पहले दिन से आज तक इसके झटके महसूस किये जाते रहे हैं। सोवियत यूनियन के बिखरते ही १५ अलग–अलग राष्ट्र अस्तित्व में आए जिनमें केन्द्रीय राष्ट्र रूस का था। इन स्वतन्त्र राष्ट्रों में यूक्रेन को अपने इतिहास व भूगोल तथा राजनीतिक परिदृश्य के आधार पर सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यूक्रेन १९२० ई० से लेकर १९९१ ई० तक सोवियत यूनियन का हिस्सा था, नब्बे के दशक में जब सोवियत यूनियन का पतन होने लगा तो यूक्रेन ने १६ जुलाई १९९० ई० को सोवियत यूनियन से अलगाव की घोषणा कर दी और फिर लगभग एक साल बाद २४ अगस्त १९९१ ई० को उसने अपनी स्वायत्ता व सोवियत यूनियन से सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी।

यूक्रेन लगभग पांच करोड़ की आबादी पर आधारित एक ईसाई देश है जिसमें लगभग १७ प्रतिशत के करीब आबादी रूसी नस्ल से है। रूस का हमेशा से दावा है कि यूक्रेन उसी का हिस्सा है। इसी आधार पर १९२१ ई० में स्टालिन ने यहां इतिहास की बदतरीन क्रूरता की थी, जिसका उद्देश्य यूक्रेन से यूक्रेनियों का सफाया था, लेकिन हज़ारों मौतों के बावजूद यूक्रेनियों का आजादी का जज्बा ठंडा न पड़ सका। यूक्रेन पूर्वी यूरोप में क्षेत्रीय रूप से रूस के बाद सबसे बड़ा देश है। इसकी सीमाओं में लेथूवानिया, पोलैण्ड तथा रोमानिया शामिल हैं; जहां अमरीका ने नैटो की सहायता से अपने सैन्य अड्डे बना रखे हैं। यूक्रेन की अधिकांश जनसंख्या पश्चिमी स्वभाव की समर्थनकर्ता है तथा खुद यूक्रेन भी नैटो में सम्मिलित होना चाहता है, जिसमें अमेरिका की जाति दिलचस्पी भी शामिल है ताकि रूस को पूर्ण रूप से नियन्त्रित करना आसान हो । इधर रूस का हमेशा से दावा है कि यूक्रेन उसी का हिस्सा है जिसे ताकत के बल पर वह दोबारा हासिल कर सकता है। लेकिन

नैटो में शामिल होने के बाद यूक्रेन जैसे कमजोर देश के सामने रूस को घुटने टेकने पड़ सकते हैं, क्योंकि ऐसी स्थिति में अगर रूस यूक्रेन के खिलाफ कोई कार्यवाही करता है। तो यह कार्यवाही पूरे नैटो देशों के खिलाफ होगी और अकेला रूस नैटो की ताकत का सामना नहीं कर सकता है, इसलिए वह हर सूरत में यूक्रेन को नैटो में शामिल होने से रोकना चाहता है।

२०१०ई० में विक्टर येनूकोविच यूक्रेन का राष्ट्रपति बना। उसका झुकाव पश्र्चिमी यूरोप के बजाय रूस की ओर था। इसलिए यूरोपीय यूनियन से सम्बद्ध होने की संधि तोड़ दी, जिसके बाद पूरे यूरोप में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। इस विरोधी लहर के नतीजे में विक्टर यानूकोविच को सत्ता छोड़कर रूस में पनाह लेनी पड़ी। इसी दौरान यूक्रेन के पूर्वी इलाकों से रूस की सीमाओं पर तैनात सैनिकों पर हमले हुए, इसे ही मुद्दा बनाकर रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन के सबसे ज्यादा रूसी इलाके के तौर पर जाने जाने वाले क्रीमिया पर कब्जे की कोशिश की, पहले रूसियों के अत्याचार का हवाला देकर वहां अपनी सेना उतारी, फिर देश के दूसरे हिस्सों से काट दिया, इसके बाद वहां की अधिकतर रूसी मूल की आबादी का रेफरेन्डम कराकर उसे रूस का हिस्सा बना लिया। क्रीमिया पर कब्जे के समय रूस ने मौके का फायदा उठाते हुए पश्र्चिमी यूक्रेन के दो राज्यों लूहांस्क और डोनेस्क पर भी कब्जा कर लिया और बाद में उसे रूस समर्थित अलगाववादियों के हवाले कर दिया, जहां लगातार होने वाली झड़पों का सिलसिला शुरू हो गया, जिसने गृहयुद्ध का रूप धारण कर लिया। अलगाववादी रूस समर्थित हैं तथा यह दोनों राज्य यूक्रेन के सर्वाधिक उपजाऊ राज्य माने जाते हैं। २१ फ़रवरी २०२२ई० को रूस ने इन दोनों राज्यों को स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया तथा दोनों देश नोवेरूसिया नामक ईसाई फेडरेशन में शामिल हो गए फिर अमन बहाली के नाम से रूस ने नोवेरूसिया में अपनी फौजें भी उतार दीं। रक्षा शक्ति के मामले में यूक्रेन की रूस से कोई तुलना नहीं है। दुनिया भर में सैन्य शक्तियों तथा रक्षा के साज़ व सामान के आधार पर देशों का वर्गीकरण जारी करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ग्लोबल फायर पॉवर' के अनुसार रूस दुनिया की दूसरी बड़ी सैन्य शक्ति है जबकि यूक्रेन का नम्बर बाइसवां है। रूस के पास बड़ी संख्या में एटमी हथियार भी मौजूद हैं। सोवियत यूनियन के समापन के बाद रूस को सोवियत एटमी हथियारों का बड़ा भण्डार विरासत में मिला था, यद्यपि रूस ने अपने एटमी हथियारों के भण्डार में बड़ी हद तक कमी भी कर दी थी, लेकिन उसके बावजूद वह अब भी दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी एटमी शक्ति है। २०१८ई० में जनता से अपने वार्षिक संबोधन में पुतिन ने बहुत गर्व के साथ रूस के नए तथा ताकतवर हथियारों का वर्णन किया था। यह बात दिलचस्पी से खाली नहीं होगी कि सोवियत यूनियन से अलगाव के समय यूक्रेन के पास काफी एटमी हथियार मौजूद थे जो संख्या के लिहाज़ से दुनिया भर में इस समय तीसरे नम्बर पर थे। यह हथियार सोवियत यूनियन की ओर से वहां छोड़े गए थे फिर भी आज़ादी के बाद यूक्रेन ने खुद को एटमी हथियारों से पाक करने का निर्णय लिया, उसके इस कदम के बदले में अमरीका, इंग्लैण्ड और रूस ने १९९४ई० में यूक्रेन की सुरक्षा को यकीनी बनाने का समझौता किया जिसे बुडापेस्ट मेमोरेन्डम कहा जाता है। वर्तमान परिस्थिति में जब दोनों देशों के बीच जंग छिड़ चुकी है यह समझौता फिर बहस का केन्द्र है।

रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने से पहले-पहले जब नैटो एकता तथा अमरीका की ओर से यूक्रेन की हर प्रकार की मदद की खबरें आ रही थीं तब अक्सर लोग यही समझते थे कि तीसरा विश्र्व युद्ध होने वाला है लेकिन जब रूस ने यूक्रेन पर हमला किया तथा नैटो, अमरीका, इंग्लैण्ड सबने केवल राजनीतिक बयानों तथा प्रतिबन्धों पर संतोष किया तो तीसरे विश्वयुद्ध के गुब्बारे से भी हवा निकल गयी। अब यह जंग ज्यादा देर तक जारी नहीं रहेगी बल्कि बहुत जल्द रूस बहुत से महत्वपूर्ण स्थानों पर कब्जा करके जंगबंदी की घोषणा कर देगा।



रसूलुल्लाह (स०अ०व०) तशरीफ लाते हैं, उनके साथ अम्बिया और औलिया होते हैं और यह सिलसिला मुद्दतों जारी रहा, उन्हें इस पर पूरा यकीन था। कहने लगे कि एक बार मुझे यह ख्याल हुआ कि आप हमेशा तशरीफ़ लाते हैं, मैं कोई तोहफा नहीं पेश कर पाता, मुझे कोई तोहफा पेश करना चाहिए, लिहाजा वह सोचने लगे कि मैं आपकी खिदमत में क्या दे सकता हूं, तो उनके जहन में यह बात आयी कि मैं सूरह यासीन का तोहफा पेश करूं, कहने लगे कि मैंने सूरह यासीन पढ़नी शुरू की तो उसका कुछ हिस्सा ही तिलावत किया था कि मुझे अजीब सा लगा, मैं जो समझता था कि मेरे सामने । अर्श है और फर्श है और यह हज़रात इस पर तशरीफ फ़रमा हैं, मेरी आधी सूरह यासीन ही होती थी कि मुझे ऐसा लगा कि वह सब गायब हो रहा है और जिनको मैंने बुजुर्ग समझा था, दाएं-बाएं से वह सब एक-एक करके गायब होना शुरू हो गए, मुझे बड़ा अजीब सा लगा लेकिन पढ़ता रहा, कहते हैं कि जब मैंने सूरह यासीन मुकम्मल की तो मैं क्या देखता हूं कि मैं जिसके बारे में यह समझता था कि यह अल्लाह के रसूल (स०अ०व०) हैं, अपनी आंखों से मैं यह यकीन करता था कि मैं उन्हें देख रहा हूं और मैं उनकी ज़ियारत कर रहा हूं, वहां पर मुझे एक अजीब सी शक्ल नज़र आयी। एहतियात की जरुरतः

वाक्या यह है कि इस सिलसिले में ऐसे-ऐसे धोखे होते हैं कि आदमी समझता है कि मैंने अपनी आखों से देखा, हालांकि यह ऐसी हकीकतें हैं कि आदमी उनको जानता नहीं और धोखा खाता है, इसलिए इसमें बड़ी एहतियात की ज़रूरत है। आदमी की आखों ने जो नहीं देखा वह लोगों के सामने बयान न करे और अपनी आंखों को न दिखाए, दिखाने का मसला यह है कि वही सूरते मुत्खय्यला है जो देख नहीं रहा है वह दिख रहा है। इस जोर से उसका तसब्बुर दिमाग में ला रहा है कि सोचते-सोचते वह समझने लगा कि गोया

खतरनाक बातः बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि हमने बेदारी में रसूलुल्लाह (स०अ०व०) की जियारत की है, यह और ज्यादा खतरनाक बात है, ख्वाब की जियारत अपनी जगह, वह बरहक है, जिसने हुजूर को देखा उसने हुजूर ही को देखा, शैतान आपकी मुबारक सूरत में आ ही नहीं सकता, लेकिन अगर कोई बेदारी में यह दावा करता है कि उसने हुजूर को देखा है यह और ज्यादा खतरनाक बात है। इसमें बडा धोखा होता है, अब्बल तो बेदारी में जो इस तरह के वाक्यात होते हैं, उनका कोई भरोसा नहीं होता, वह एक सूरते मुत्खय्यला होती है, जिसका ख्याल इस ताक़त के साथ दिमाग के अन्दर उतर आता है कि आदमी यह समझ जाता है कि हमने मुलाकात की, जियारत की, हालांकि वह सिर्फ सूरते मुत्खय्यला होती है, कुछ भी नहीं होता, तो इसमें आदमी धोखे में पड़ता है और अगर नहीं भी पड़ता है तो अपनी बुजुर्गी जतलाने के लिए लोगों को धोखे में डालता है, इसलिए भी यह इन्तिहाई खतरनाक बात है।

सबक आमोज वाक्यातः ।

दिल्ली में हमारे खुसर साहब के एक ताल्लुक वाले थे, उन्होंने अपना एक अजीब वाक्या सुनाया, वह बिदअती जहन के थे और हफ्ते में एक दिन अपने घर की सफाई करते थे, वह यह समझते थे कि अल्लाह के रसूल (स०अ०व०) हर हफ्ते उनके यहां तशरीफ लाते हैं और सिर्फ समझते ही नहीं थे बल्कि वह कहते थे कि मैं अपनी आंखों से मुशाहिदा करता हूं कि

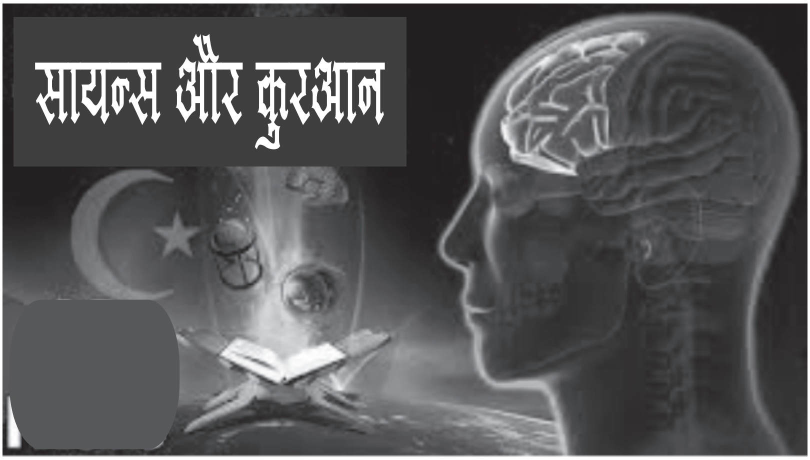
मैं देख रहा हूं हालांकि कुछ भी नहीं देख रहा है, तो यह धोखे हैं, उनमें पड़ना ठीक नहीं, लेकिन बहुत से लोग धोखे में पड़ जाते हैं और बुजुर्गी के कायल हो जाते हैं। हालांकि यह फरेब है। इन चक्करों में पड़ना नहीं चाहिए, इसमें बहुत एहतियात की ज़रूरत है।

बहतरीन खयानतः

हज़रत सुफियान बिन असीद हज़रमी (रजि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (स०अ०व०) को फ़रमाते हुए सुना है कि बदतरीन खयानत यह है कि तुम अपने भाई से ऐसी बात करो जिसमें वह तुमको सच्चा समझ रहा हो, हालांकि तुम उससे झूठ बोल रहे हो (सुनन अबी दाऊदः ४९७३) इस हदीस में रसूलुल्लाह (स०अ०व०) ने इरशाद फ़रमाया कि तुम अपने भाई से कोई बात करो और वह तुम पर भरोसा करके तुम्हें सच्चा समझ रहा हो, हालांकि तुम उससे झूठ बोल रहे हो, तो यह इन्तिहाई खयानत की बात है, आम तौर पर यह उन लोगों के साथ होता है जिन पर समाज को एतमाद होता है, लोग उनको बड़ा समझते हैं, दीनदार समझते हैं और उनकी बातों को सच जानते हैं, लेकिन खुद उनका हाल यह होता है कि वह गलत बातें बयान करते हैं और उसके भी कुछ मकसद होते हैं, जैसे: अपनी बड़ाई जताने के लिए, अपनी बुजुर्गी के मुजाहिरे के लिए, या कभी किसी जाहिरी माद्दी मुनाफे के लिए, लोगों का यह अजीब–गरीब माद्दी मिजाज होता है, जो लोग दीनदार नजर आते हैं. कभी–कभी उनका भी यह माद्दी मिजाज होता है, इसीलिए तन्हा जाहिरी दीनदार काफी नहीं, बल्कि सबसे बड़ी बात यह है कि आदमी कितना सच बोलता है, लिहाजा किसी की जाहिरी वज़अ–कतअ देखकर, उसकी बातों से मुतास्सिर होकर, कोई शख्स आला किस्म की तकरीर कर रहा है, कोई दुआ में रुला रहा है और रो रहा है, यह सारी बातें ऐसी हैं जो बुजुर्गी और सच्चाई की कोई अलामत नहीं है, सच्चाई की जो अलामत है वह अल्लाह के नबी (स०अ०व०) की पैरवी है, यह देखना चाहिए कि सुन्नतों का एहतिमाम कितना ज्यादा है और उसमें सबसे बड़ी बात यह है कि जबान की कितनी एहतियात है, उसका कितना सही इस्तेमाल है और कितना गलत इस्तेमाल है, यह बात ऐसी है कि एक अलामत के तौर पर देखी जा सकती है, जांची जा सकती है और उसके बगैर देखे आदमी किसी चीज़ पर मुतास्सिर हो जाए तो उसका कोई भरोसा नहीं।

दोहरा गुनाहः

हदीस शरीफ में फरमाया गया कि बड़ी खयानत की बात है कि बेचारा एक शख्स तुम्हें अच्छा समझ रहा हो, सच्चा समझ रहा है और तुम्हारी बात पर यकीन कर रहा है, मगर तुम्हारा हाल यह है कि तुम उसको झूठ बातें बता रहे हो, उसको फ्रेब में रख रहे हो, धोखा दे रहे हो। बहुत सी चीजें ऐसी होती हैं जो माद्दी मुनाफे के लिए होती हैं, बेचारा कोई कारोबारी आदमी आपसे कुछ पूछने के लिए इस नियत से आया है कि तुम सच्चे आदमी हो, झूठ नहीं बोलते, आकर वह पूंछ रहा है कि फलां के बारे में आप क्या जानते हैं? उसके बारे में आप खुब जानते हैं कि वह धोखेबाज है, लेकिन फिर भी आपने उसकी बड़ी तारीफ़ कर दी कि वह बहुत अच्छा और साफ–सुथरा आदमी है, मामला सही करता है, तुम जाकर अपना मामला उसी से कर लो और तम्हारे दिल में यह छपा हैं कि जब उसक मामला होगा तो कुछ फायदा उसको भी होगा और हमारा भी कुछ कमीशन हो जाएगा, क्योंकि आजकल कमीशन पर भी काम होते हैं। बहरहाल किसी भी नफे के लिए, चाहे इज़्ज़त का फायदा नजर आता हो, अगर उसकी तरह कोई करता हो तो इन्तिहाई खतरनाक बात है। यह सिर्फ झूठ नहीं है बल्कि खयानत है। खयानत इसलिए कि वह बेचारा तुम्हें अमीन समझ रहा है, अमानतदार समझकर बात कर रहा है और तुम उसके साथ बातचीत में खयानत कर रहे हो, गोया उसे धोखा दे रहे हो, वह तुम्हारी बात पर यकीन करके किसी से मामला करना चाहता है, या तुम ही को बुजुर्ग समझकर वह कुछ हासिल करना चाहता है और तुम उसके साथ धोखा कर रहे हो, तो यह एक बड़ी खयानत की बात है, तन्हा सिर्फ झूठ नहीं है।



कुरआन में कुछ ऐसे असाधारण वक्तव्य भी हैं, जिनकी आधुनिक विज्ञान द्वारा अभी तक पुष्टि नहीं हो सकी है। मैं उनके बारे में कहूँगा कि सारे ही प्रमाण वैज्ञानिकों का जो मार्ग–दर्शन करते हैं वह यही है कि वे यह मानें कि ये वक्तव्य अत्याधिक सम्भावित हैं। इस सिलसिले का एक उदाहरण यह है कि कुरआन का बयान है कि जीवन आबी जहूर है। दूसरा यह कि कायनात में कहीं हमारी दुनिया के जैसे दुनियां मौजूद है। इन सायन्सदान के सोच के कारण हम यह कभीभी न भूलें कि कुरआन एक बेहतरीन मजहबी किताब है और स्वाभाविक है कि उससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती है कि उसका मक्सद विज्ञान से सम्बद्ध होगा। जहां कहीं भी तहरीर कर्दा और कुदरती चीजों पर सोचने के लिए इन्सान को बुलाया गया है। यहां ऐसे मिसालों का मक्सद केवल अलही हरजगह पर मौजूद है। ये फॅक्ट है कि इन विचारों एवं चितनों के द्वारा हमें उस सामग्री का संकेत मिल सकता है, जिसका संबंध वैज्ञानिक जानकारी से है, वास्तव में एक और खुदायी तोहफा है, जिसके मूल एवं महत्वों को ऐसे युग में अवश्य ही प्रकाशमान होना चाहिए, जिसमें विज्ञान का सहारा लेकर भौतिकवादी नास्तिकता इस प्रयास में है कि खुदा में जो आस्था पायी जाती है, उसकी बलि देकर अपना शासन और नियन्त्रण स्थापित कर सके। हम कुरआन के उन वक्तव्यों का परीक्षण करेंगे, जिसमें विशेष रूप से वैज्ञानिक तथ्य दर्ज है, किन्तु पहले समय के लोग उनके केवल ऊपरी अर्थ ही समझने की स्थिति में थे। यह कल्पना कैसे की जा सकती है कि कुरआन में कोई परिवर्तन हुआ है। यदि हुआ है तो ये गूढ अर्थी अंश जो कुरआन में बिखरे पड़े है, मनुष्य की साजिश से बच कैसे गये? पाठ में मामूलीसी तब्दीली भी उनकी उस बिलक्षण सुसंगति को स्वतः भंग कर देती जो उनकी अपनी विशिष्टता है और हम आधुनिकज्ञान–विज्ञान से उनकी पुष्टि करने में असमर्थ रहते।

इन वक्तव्यों का पूरे कुरआन में पाया जाना ही एक निष्पक्ष व्यक्ति के लिए कुरआन की प्रामाणिकता का स्पष्ट चिन्ह है। कुरआन एक ऐसा शिक्षा–प्रसारण है, जिसका परिचय तरतीब अवतरण और प्रकाशना के माध्यम से मानव को प्राप्त हआ और मोटे तौर से इसमें बीस वर्ष का समय लगा, जो हिजरत के पहले और बाद की दो समान कालावधि को व्याप्त है। इस दृष्टि से यह स्वाभाविक ही था कि विचार एवं मनन हेतु वैज्ञानिक विचार पूरे ग्रन्थ में बिखेरा जाता। ऐसे अध्ययन के लिए जैसा कि हम करना चाहते थे। एक–एक सूरः से उन्हें जमा करके विषयानुसार उनका वर्गीकरण किया है।

उनको कैसे वर्गीकृत किया जाए? इस सम्बन्ध में किसी विशेष प्रकार के वर्गीकरण के सुझाव का सकेत हमें कुरआन में नहीं मिल सका। यह फैसला किया कि उन्हें मैं अपने तौर पर प्रस्तुत सबसे पहले सृष्टि के विषय को लेना उचित रहेगा। इस विषय से सम्बन्ध रखने वाली आयतों और कायनात के सम्बन्ध में

आज के प्रचलित विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। दूसरे यह कि हमने आयतों को इन सामान्य शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया है। खगोल विज्ञान, पृथ्वी, जीव–जन्तु तथा वनस्पति जगत, मानव, विशेषतः प्रजनन–प्रक्रिया,अन्तिम विषय को कुरआन ने एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उक्त सामान्य शीर्षकों को तदाधिक उपशीर्षकों के अन्तर्गत भी रख सकते है।

यह उपयोगी रहेगा कि आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण के प्रकाश में कुरआन और बाइबिल के वर्णः एव वक्तव्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये। कायनात की दुनिया के सम्बन्ध में कुरआन के वर्णन एवं वक्तव्य का अवलोकन करें। इस सिलसिले में हमारे समक्ष एक महत्वपूर्ण सामान्य बात यह उभर कर आती है कि यह वक्तव्य बाइबिल के बयान से भिन्न है। यह चालन कथित समानताओं के विरुद्ध है, जिन्हे साधरणतया पाश्चात्य लेखक गलत तौर से केवल इसलिए सामने रखते हैं, ताकि वे दोनों ग्रन्थी समरूपता सिद्ध कर सके।

पश्चिम की यह दृढ प्रवृत्ति है कि अन्य विषयों की तरह सृष्टि के सम्बन्ध में भी बात करते हुए दावा किया जाता है कि मुहम्मद स्व० ने बाइबिलक सामान्य खाके की केवल नकल की है। निरंदर याइबिल में वर्णित सष्टि के छ दिन और सदाधिक एक अतिरिक्त सातवां दिन, जो ईश्र्वर के आराम का दिन माना गया है, उसकी तुलना कुरआन की सूरः अल–आराफ (७:५४) की एक आयत से की जा सकती है ''तुम्हारा खुदा अल्लाह है, जिसने दुनिया और आसमानों को छः दिन में बनाया।''

हमें यह स्पष्ट करना होगा कि ऐयाम' जिसका एक अर्थ दिन भी है, आधुनिक टीकाकारो की दृष्टि में इससे अभिप्रेत लम्बी अवधि है न कि चौबीस घण्टे का समय। जो बात मूलभूत महत्व की लगती है। वह यह है कि बाइबिल के विपरीत कुरआनमे दुनिया और आसमान की सृष्टि का कोई क्रम नहीं दिया गया है। कुरआन जब सामान्य रूप से सृष्टि का उल्लेख करता है तो कभी आकाश से पहले पृथ्वी का वर्णन करता है, तो कभी पृथ्वी से पहले आकाश का, जैसे सूर ताहा (२०:४) में है। ''अवतरण है उसकी ओर से, जिसने पैदा किया धरती और ऊंचे आकाश को।''

निश्चय ही कुरआन के वर्णन से ऐसा आभास मिलता है कि धरती और आकाश का विकास साथ–साथ हुआ है। इसमें कुछ ऐसे तनाजा असल आंकड़े भी पाये जाते है, जिनका सम्बन्ध आरम्भिक गैसीय शशि (दुखान) से है, जो अद्वितीय है, जिसके तत्व पहले परस्पर मिले हुए थे (रतक) और बाद में अलग–अलग (फत्क) हो गये। यह धारणा सूर हा० मीम० अस्–सज्दा (४१:११) में व्यक्त है: ''खुदा ने आकाश की ओर मुख किया जबकि वह धुआं ही धूआं था।'' यह बात एक अन्य सूर अल–अंबिया (२१:३०) में भी व्यक्त की गयी है ''क्या काफिर यह नहीं जानते कि धरती और आकाश पहले परस्पर मिले हुए थे और फिर हमने उन्हें अलग–अलग कर दिया?''

अलगाव की इस प्रक्रिया से कई दुनियाएं मूर्तिमान हुए यह बात कुरआन में दर्जनों बार आयी है। एक बार तो यह सूर अल्–फातिहा (१:१) के प्रथम अनुवाक्य के रूप में ही आयी है। ''प्रशसा ईश्र्वर के लिए है, जो सारे संसार का रब (पालन–कर्ता प्रभु) है।''

ये सब बातें आधुनिक धारणाओं से पूर्णतः मेल खाती हैं कि किस प्रकार आरम्भ में कोहरेदार अस्तित्व पाया जाता था और फिर किस प्रक्रिया के अन्तर्गत वे तत्व अलग–अलग हुए, जिनसे प्रारम्भिक पुंज बना था। इसी अलगाव ने नीहारिकाओं को जन्म दिया और जब इनके विभाजन से तारे बने, तो उन्हीं से बाद में ग्रहों ने जन्म लिया।

कुरआन में सूरः अल्फु नि (२५:५९) में आकाश और धरती के मध्य एक बीच की अन्य सृष्टि के बारे में कहा गया है'' जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, छ. दिनों में पैदा किया।''ऐसा लगता है कि बीच की यह सृष्टि' संगठित खगोलीय–प्रणाली के बाहर आधुनिक खोज द्वारा पाये गये पदार्थ–सेतु के बारे में है। इस सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि आधुनिक आंकड़े और कुरआन के

बयानों में बहुत से बिन्दुओं पर मतैक्य पाया जाता है। इस तरह हम बाइबिल के नितांत अमान्य बयानों से कहीं आगे आ गये है। खासतौर पर बाइबिल का यह कहना कि पृथ्वी की सृष्टि आकाश से पहले हुई. अर्थात तीसरे दिन, आकाश की याद में हुई. अर्थात चौथे दिन। हालांकि यह ज्ञात तथ्य है कि हमारा ग्रह अपने नक्षत्र सूर्य से उत्पन्न हुआ है। ऐसी स्थिति में हम यह कैसे सोच सकते हैं कि कुरआन का लेखक कोई ऐसा मनुष्य है, जिसने बाइबिल से प्रेरणा ली हो और अपने तौर पर बाइबिल के सृष्टि–सम्बन्धी कथन को संशोधित करके उसे ऐसी सामान्य धारणा के रूप में पेश किया, जिसकी खोज उसकी मृत्यु के कई शताब्दी बाद हो सकी।

नमाज़

अल्लाह व रसूल की इताअत (इस्लाम) क़बूल करने के बाद इस्लाम में सब से अहम चीज़ नमाज़ की पाबन्दी है। नमाज़ को कुफ्र व इस्लाम के बीच फ़र्क का निशान क़रार दिया गया है। अल्लाह के प्यारे रसूल की एक हदीस का मतलब यह है कि जिसे तुम मस्जिद जाताआता देखो, उसके मोमिन होने की गवाही दो। मतलब यह है कि जो मोमिन होगा वही मस्जिद जाएगा, दूसरा तो कोई जाने से रहा और क्यों जाए, जब मस्जिद जाने वाला मोमिन है तो फिर न जाने वाला कौन होगा?

हम खुद ही सोच सकते हैं। यही वजह कि अल्लाह ने कुरआन मजीद में बार–बार पाबन्दी से नमाज़ पढ़ने की ताकीद फ़रमाई है। २४ घन्टे में पांच बार अपने रब के दरबार में खड़े होकर, उसे याद करने, उसकी इबादत करने से ईमान मज़बूत होता है। यही इस्लाम की रूह है। माना कि रोज़ा, ज़कात और हज वगैरा भी अल्लाह की इबादतें हैं लेकिन इनका नम्बर तो कभी–कभी आता है जब कि नमाज़ का नम्बर २४ घंटे में पांच बार आता है। इसलिए मोमिन की रूहानी तरक्की के लिए नमाज़ की पाबन्दी मुफ़ीद भी है और ज़रूरी भी। नमाज़ की पाबन्दी की बरकत से हमारे अन्दर वह खूबियां पैदा हो जाती हैं जिसकी बशारत कुरआन व हदीस में बयान हुई है दुनिया में तशरीफ़ लाने वाले सारे नबियों रसूलों ने नमाज़ की पाबन्दी फ़रमाई और इसकी तब्लीग़ फ़रमाते रहे।

इस्लाम में पाबन्दी से नमाज़ अदा करने के साथ साथ हर नमाज़ मस्जिद में जमाअत से अदा करने की भी ताकीद की गई है। जमाअत की पाबन्दी से होने वाले दीनी व दुनियावी फ़ाएदों के बारे में आपने पिछले शुमारों में पढ़ा होगा कि जमाअत की पाबन्दी से समाज में महब्बत और भाई चारा भी बढ़ता है, एक दूसरे के हालात से आगाही भी होती रहती है। जमाअत की बरकत से क़ौम में इत्तेहाद, इत्तेफ़ाक़ और हमदर्दी का माहौल बना रहता है। जब से हमने इस से लापर्वाही बरती, यह खूबियां हमारे समाज से ख़त्म हो गई।

नमाज़ अल्लाह की इबादत है, कोई रस्म दस्तूर या टोटका नहीं। इसलिए नमाज़ पढ़ने से पहले हमें सोचना चाहिए कि हम क्या और क्यों करने जा रहे हैं? हम किसके दरबार में पेश होने जा रहे हैं। इसी तरह हमें क़यामत में भी उस दरबार में पेश होना होगा जहां हमारा हिसाब लिया जाएगा। यही ख़याल व नज़रिया हमें गुनाहों से बचाएगा जिसके लिए अल्लाह पाक ने फ़रमाया है कि नमाज़ इन्सान को बुराईयों और बेहयाईयों से बचाती है। अल्लाह पाक हमें नमाज़ को इबादत समझ कर अदा करने की तौफ़ीक़ दे। आमीन

बरकत वाले दिन

कयामत की अलामत यह भी है कि ज़माना समेट दिया जाएगा। साल एक महीना और महीना एक हफ्ता मालूम होगा। ज़माने की बर्क रफ़तारी उसकी गम्माज़ है। किस तरह साल व महीने गुजर रहे हैं, इसको हर शख्स महसूस कर रहा है। रमज़ान का यह मुबारक महीना जिसका लम्हा–लम्हा खैर व बरकत है किस तरह तेज़ी के साथ गुज़र रहा है, लगता है कि सोचने की भी मोहलत नहीं। ज़रा सी गफलत कितनी बड़ी महरूमी की वजह बन सकती है, पलक झपकी और ईद का चांद सामने।

ज़रूरत तो इसकी भी थी कि रमज़ान से पहले ही पूरा निज़ाम बना लिया जाता और एक–एक लम्हे की क़द्र होती। दुनिया के कामों को पहले ही से ठिकाने लगा दिया जाता, मगर अब जो वक़्त भी रह गया है, उसको गनीमत समझा जाए और भरपाई की कोशिश की जाए्। जो लोग पहले से तैयारी कर लेते हैं और दिल की जमीन को रहमते इलाही के काबिल बना लेते हैं उन पर पहले दिन और पहले लम्हे से रहमतों की बारिश होती है। वह मिनटों और सेकेन्डों का हिसाब करते हैं। एक लम्हा भी गफलत में न गुज़रने पाए यह खास कमाई का ज़माना है। वह बोलते हैं तो तौलते हैं, कोई बात नामुनासिब ज़बान से न निकल जाए। गीबत, चुगली, बुरी बात कहना, अश्लीलता का तो सवाल ही नहीं, बेकार की बातों से भी बचते हैं। वह अपने अमल का हिसाब लेते रहते हैं, बल्कि बेहतर से बेहतर की तरफ़ उनका सफ़र जारी रहता है।

जो पहले से फ़िक्र नहीं करते वह अक्सर पूरा महीना गफलत में गुजार देते हैं। रोज़ा काटने के ज़रिये तलाश करते रहते हैं। यह मुबारक महीना उनको बोझ महसूस होता है और बहुत से किस्मत के महरूम वह भी होते हैं जिनके रमज़ान और गैर रमज़ान में कोई फर्क ही नहीं होता । नाम मुसलमान का लेकिन काम गैरों के। अल्लाह तआला ने यह महीना उम्मत की फलाह व बहबूद के लिए रखा है। इसके जरिए से सालभर का कोटा हासिल होता है। यह एक महीने की मेहनत साल भर काम आती है। हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी इमाम सरहिन्द ने लिखा है कि जिसका रमज़ान अच्छा गुज़र गया उसका पूरा साल अच्छा गुजरता है।

यह महीना जिक्र व तिलावत का है। दुआ व मुनाजात का है । गमगुसारी का है व हमदर्दी का है। इसको हदीस में शहरुल मुआसात कहा गया है। इस महीने में अल्लाह ने रोज़े इसलिए फ़र्ज किए ताकि मिज़ाज मैं तकवा पैदा हो और आदमी एहतियात की ज़िन्दगी गुजारने का आदी बने। जो अल्लाह के लिए जाएज व हलाल चीजें छोड़ रहा हो वह हराम, शुब्हे वाली चीज़ों को कैसे अख्तियार कर सकता है। रोजों से अपने मन पर कंट्रोल करने और उसको काबू में रखने की मश्क होती है और यह मश्क उसकी ज़िन्दगी में ढाल की तरह साबित होती है। वह इसके जरिए से अपनेआप को शैतानी हमलों और नफ़सानी चालों से महफूज़ रखता है। जितने भी दिन इस मुबारक महीने के बाकी हैं, उनको बेहतर से बेहतर गुज़ारने की कोशिश की जाए ताकि यह महीना हमसे राज़ी होकर जाए और हम इस बद्दुआ के मुस्तहिक न हो जाएं जो आप (स०अ०) ने उस शख्स को दी है जिससे यह महीना नाराज़ होकर जाता है।

तिब्बे नबवी — जादू और जहर का इलाज

इब्ने हिबान और अबू नईम ने इब्ने अब्बास रजि० से रिवायत की है कि नबी सल्ल० के करीब अज्वा खजूर बहुत ही प्यारी थी। आप का इर्शाद है कि अजवा खजूर जन्नत से है और इसमें जहर से शिफा है और फरमाया कि जो आदमी रोज़ाना सुबह को सात अज्वा खजूर खाएगा वह उस रोज़ जहर और जादू से महफूज़ रहेगा और कुछ रिवायतों में है कि अज्वा जन्नत से है। इसमें बीमारियों से शिफा है।

हेजाज़ रेलवे परियोजना



हाजियो की सफर की मशक्कत कम हो सके। इस नेक काम मे दुनिया भर के मुसलमानों ने हिस्सा लिया जिनमे हैदराबाद के निज़ाम, ईरान के शाह और मिस्त्र मोरक्को वगैरह के हाकिम सबसे आगे थे। इस प्रोजेक्ट पर काम करने वालों के जुनून ने यूरोपीय रेलवे विशेषज्ञों को हैरत में डाल दिया था क्योंकि वह लोग एक साल में १०० किलोमीटर से अधिक ट्रैक बनाने को नामुमकिन काम घोषित कर दिया

१ सितंबर, १९०० को, सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय के आदेश पर,खिलाफत ए उस्मानिया अधिकारियों ने मदीना मुनव्वरा को दमिशक (सीरीया) और तुर्की के इस्तांबुल से जोड़ने वाली १,३२० किलोमीटर रेलवे प्रोजेक्ट पर काम करना शुरू किया। ये प्रोजेक्ट सितंबर १९०८ में कंप्लीट हो गया था और प्रथम विश्र्व युद्ध के दौरान १९१६ में नष्ट होने तक रेलवे चालू रहा।आज शायद ही कोई ये बात जानता होगा कि इस महान रेलवे प्रोजेक्ट तैयार करने करने में दुनिया के सभी हिस्सों के आम मुसलमानों द्वारा चंदा जमा किया गया था यहां तक की मुसलमान औरतों ने अपने गहने और ज़ेवर तक इस अज़ीम काम के लिए दान कर दिये थे किसानो ने अपनी जमीन से गुजरने वाली रेलवे लाइनों से प्रभावित किसानों ने ओटोमन राज्य से मुआवजा लेने से इनकार कर दिया था, तुर्क सैनिकों और अरब सैनिको ने रेलवे लाइन के निर्माण के लिए बिना पैसे लिए मज़दूरी की अरब परिवारों ने यह सुनिश्र्चित किया कि उनके बेटे अपने पिता का अनुसरण करते हुए सम्मानित रेलवे करियर में वॉलेंटियर्स की तरह शामिल हों। ये एक मंहगा प्रोजेक्ट था जिसकी उस वक्त की लागत ४ मिलियन तुर्की लीरा थी यानी लगभग ५७० किलों सोना उस वक्त तन्हा खुद आर्थिक रूप से कमज़ोर हो रहा था क्योंकी रूस टर्की युद्ध के ज़ख्म ही अभी भरे नहीं थे लेकिन खलीफा चाहते थे ये प्रोजेक्ट ज़रूर कंप्लीट हो ताकी

था,लेकिन तुर्क और अरबों ने एक साल में २८८ किलोमीटर ट्रेक सफलतापूर्वक बिछा कर सबके होश उड़ा दिये थे।इस प्रोजेक्ट की कामयाबी सारा यूरोप और ब्रिटेन जल भुन गया था इसी जलन में अंग्रेजों ने सक्रिय रूप से अरबी बद्दु जनजातियों और खानाबदोश अरबों को तुर्की खलीफा के खिलाफ़ भड़ाकाय और रेलवे पर हमला करने के लिए प्रोत्साहित किया।इस्तांबुल में ऑस्ट्रिया के उस वक़्त के राजदूत ने १५ जनवरी १९०८ को लिखा था कि, यह आधुनिक कमर्शियल इतिहास में एक अद्वितीय वित्तीय साहसिक कार्य है। संपूर्ण हेजाज़ रेलवे परियोजना से पता चलता है कि ओटोमन्स के पास किसी भी कठिनाई को दूर करने की प्रतिभा है जब वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपना लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं। एक ब्रिटिश शोधकर्ता ने कहा, यह मानव इतिहास में पहली रेलवे परियोजना है जिसने एक टिकट बेचे जाने से पहले अपनी लागत वसूल की थी, यूरोपीय बैंक ऋण की आवश्यकता को समाप्त करने वाले मुस्लिम दान के माध्यम से प्रदान किए गए वित्त का जिक्र करते हुए कहा था। आखिर में दूसरे विश्र्व युद्ध में अंग्रोज़ो ने लॉरेंस ऑफ अरेबिया और बद्दू कबीलों की मदद से इस अज़ीम रेलवे को तहस नहस कर दिया जिसके निशान आज भी मदीना मुनव्वरा में मौजूद है जो अपनी सुनहरे दौर की कहानी बयान कर रहे हैं.

अधिकार क्षेत्र व कार्यक्षमता

दुनिया इस वक्त जिस तरह तबाही के रास्ते पर है और क्या यूरोप व अमरीका और क्या शिर्क व कुफ़्र के मरकज़' खुद इस्लामी दुनिया और मरकज़–ए–इस्लाम में जिस तेजी के साथ इस्लाम से दूरी बढ़ती नज़र आ रही है और जिस तरह वहां के अरबाब–ए–इक्तिदार ने बड़ी ताकतों के सामने हथियार डाल दिये हैं, वह मौजूदा दौर का सबसे बड़ा अलमिया है। इस्लाम की हिफाजत का वादा अल्लाह का है, वह कयामत तक रहेगा, वह न मिट सका है न मिट सकेगा और जो पूरी तरह इससे वाबस्तगी अख्तियार करेगा वह भी जहान में रहेगा। दुनिया में जहां भी निज़ामे शरीअत से बगावत नज़र आएगी, इसको दिल से बुरा समझना, इस पर जबान खोलना ईमान की अलामत है और अगर कोई इसको दिल से बुरा नहीं समझता तो उसके बाद ईमान भी खतरे में है। हदीस में आता है कि (इसके बाद तो राई बराबर ईमान बाकी नहीं रहता) (मुस्लिम शरीफ़) यह इस उम्मत की खासियत है कि इसको दुनिया के एहतिसाब के लिए पैदा किया गया है, और इकबाल ने शैतान की जबान से जो कहा है वह एक हकीकत है: हर नफ्स डरता हूं इस उम्मत की बेदारी से मैं। एहतिसाबे कायनात का यह फ़रीजा इस उम्मत के उलमा और दाइयों को अदा करना है। कमजोरियों की निशानदेही करनी है। हकाएक से बाखबर करना है। चैलेंजेज़ से आगाह करना है। मसाएल का हल तलाश करना है

और उम्मत की रहबरी का काम अंजाम देना है। लेकिन यह सबकुछ अपने–अपने दायरे अस्ति उम्मत के अन्दर बड़ा मर्ज यह पैदा हो गया है कि जो अपने अख्तियार का दायरा है उस पर तवज्ज़े नहीं की जाती और जो दूसरों के दायरे अख्तियार के काम है, सारी सलाहियतें उन पर सर्फ की जाती हैं। इसमें कोई शुल्हा नहीं कि तवज्ज़े दहानी उलमा का काम है। एहतिसाबे दी उलमा की ज़िम्मेदारी है। एहतिसाबे कायनात करने वालों की बड़ी ज़िम्मेदारी एहतिसाबे नफ्स की भी है। जो काम हम कर सकते हैं, वह हमने न किया, तो जो अख्तियार आज हमें हासिल हैं, कहीं वह भी छिन न जाएं। अल्लाह ने जो–जो दायरा–ए–अख्तियार हमें दिया है, अगर उनसे हमने फायदा न उठाया तो कहीं वह दायरा और तंग न हो जाए। दुनिया के हालात हमें इसकी आगाही दे रहे हैं और पुकार–पुकार कर कह रहे हैं कि आज जो तुम कर सकते हो वह भी तुमने न किया तो आने वाला कल तुम्हारे लिए और तंगी पैदा करने वाला है।

अपने–अपने दायरा–ए–अख्तियार को देखते हुए हम सबको अपनी–अपनी कूव्वत–ए–कार को बढ़ाने की ज़रूरत है। अपनी इस ईमानी ताकत और अमली कुव्वत हम दायरे को और वसीअ कर सकते हैं। जो वसाएल व असबाब मुमकिन हों, उनको अख्तियार करके रास्ते खोले जा सकते है। अल्लाह तअला जांफ़िशानी करने वालों की मेहनत जाया नहीं फ़रमाता है। अल्लाह के लिए, अल्लाह के रास्ते में जो कुर्बानियां दी जाती हैं वह रंग लाती है। ज़रूरत इस बात की है कि हम जो कर सकते हैं, जो अल्लाह ने हमारे दायरे अख्तियार में रखा है, हम उधर क़दम बढ़ाए, अल्लाह तआला की मदद शामिले हाल होगी। हदीसे कुदसी में है: ''मैं अपने बंदे के साथ उसके गुमान के मुताबिक़ हूं लिहाज़ा जब वह मुझे याद करता है तो मैं भी उसे याद करता है और अगर वह मुझे किसी मजलिस में याद करता है तो मैं उसे उससे बेहतर मजलिस में याद करता हूं और अगर वह मुझसे एक बालिश्त करीब होता है तो मैं उससे एक हाथ करीब हो जाता हूं और अगर वह मुझसे एक हाथ करीब होता है तो मैं उससे दो हाथ करीब होता हूं और अगर वह मेरी तरफ़ चल कर आता है तो मैं उसके पास दौड़कर आ जाता हूं।'' (बुख़ारी)

मुल्क की तामीर व तरक्की में मुसलमानों का किरदार

इस वक्त हमें सबसे ज्यादा जिस चीज़ से परहेज़ करना चाहिए वह इन्तिशार, जमाअती अनानियत, गिरोही अस्बियत और जज़्बा-ए-तफबुक है। खुदा हमको इस नाजुक तरीन लम्हे पर हमारे नुफूस और हमारे दिलों की बीमारी और बेराह रवी से बचाए और हमको हमारे नफ्सों के हवाले न करे। हिन्दुस्तान में मुसलमान पांच करोड़ की तादाद में है और हिन्दुस्तान के न मजहबी दस्तूर इनको बराबर का शहरी तस्लीम किया है और इनके तमाम हकूक और तहफ्फु जात की जमानत दी है, जो किसी आजाद जम्हरी मुल्क में किसी आजाद और बाइज़्ज़त शहरी को हासिल हो सकती है। उनके इस फैसले ने कि वह हिन्दुस्तान ही में रहेंगे और हिन्दुस्तान ही को अपना वतन समझते हैं, अख़लाकी, सियासी, कानूनी और दस्तूरी हैसियत से उनको वह तमाम हुकूक व फवाएद और आज़ादियों का हकदार बना दिया है, जो किसी मुल्क के किसी बेहतर से बेहतर शहरी को हासिल होनी चाहिए। वह अपनी तादाद के लिहाज से दुनिया के बहुत से मुल्कों की पूरी आबादी से ज्यादा और वसीअ दुनियाए इस्लाम में तीसरे नम्बर पर हैं। पाकिस्तान और इन्डोनेशिया के कसीरुत्तादाद और तकरीबन खालिस मुसलमान आबादी वाले मोमालिक के बाद इन्हीं का नाम आता है। और कहीं एक जगह मुसलमानों की इतनी बड़ी आबादी और इतनी बड़ी तादाद नहीं पायी जाती। इस अददी हैसियत के मासवा वह अपनी बहुत सी फिकरी,ज़हनी, इल्मी व अखलाकी सलाहियतों के ऐतबार से आलमे इस्लाम में मुमताज मकाम रखते हैं और बाज़ हैसियतों से वह पूरे आलमे इस्लाम में फायक है। वह बहुत से ज़हनी व इल्मी शोबों में आजाद मुस्लिम मुमालिक की भी मदद व रहनुमाई करने की अहलियत रखते है। और उनमें अब भी उनकी इंफ़्रादियत तस्लीम की जाती है और बहुत सी अखलाकी, अमली, इन्तिज़ामी और ज़हनी सलाहियतों के लिहाज से वह हिन्दुस्तान की अक्सरियत और तमाम दूसरे फिरकों के मुकाबले में मुमताज़ हैं। अकीदा-ए-तौहीद, इस्लामी अखलाक, अद्ल व मसावात के इस्लामी उसूल, दुसअते कल्ब व दुसअते नज़र, कायनाते मखलूके खुदा, इन्सानी बिरादरी और इन्सानी जान के कद्र व कीमत के मुताल्लिक इस बुनियादी नुक्ताए नजर कि बिना पर जो इस्लाम ने उनको अता किया है, उनमें तामीर का जज्बा, ताऊन और बकाए बाहम की सलाहियत, दूसरों से ज्यादा मौजूद है और इस चीज़ ने उनको ज्यादा से ज्यादा बेआजार, इन्सान दोस्त, एहसान शनास और मुल्क का वफादार बना दिया है। उन्होंने इस मुल्क की जंग आजादी का आगाज़ किया और इसमें कायदाना हिस्सा लिया और मजमूई हैसियत और अपनी तादाद के लिहाज से सबसे ज्यादा कुर्बानियां पेश की, वह दुनिया की दूसरी वसीअ तरीन बिरादरी (मिल्लत-ए-मुस्लिमां) का एक अहम और तारीखी जुज हैं, जो सारी दुनिया में फैली हुई है और जो कम से कम दो बरे आजमों (एशिया और अफ्रीका) में अव्वलीन हैसियत रखती है। और दुनिया के एक बड़े मरकज़ सियासते मश्रीके वुस्ता पर तन्हा हावी है। और हिन्दुस्तानी मुसलमान इन तमाम मोमालिक से बेहतर ताल्लुकात पैदा करने के लिए बेहतरीन ज़रिया साबित हो सकते है। बल्कि एशिया की जो होशमंद और हकीकत पसंद कयादत खुलूस और संजीदगी के साथ इस बिरादरी का एतमान हासिल करेगी वह अपने को उसका सच्चा दोस्त और

मुस्लिस रफीक साबित करेगी। वह मशरीक की सबसे बड़ी ताकत बन जाएगी।

इन सब बदीही हकाएक का लाज़मी और फितरी तकाजा था कि मुसलमानों को इस मुल्क में अमलन वह सबकुछ हासिल हो जो इनको दस्तूर के औराक पर उसूली और कानूनी तौर पर हासिल है। यहां के ज़हन से अक्सरियत व अक्लयित का तसव्वुर भी मह्व हो चुका हो और सिर्फ हिन्दुस्तानी का तसव्वुर बाकी रह गया हो। किसी मुसलमान के साथ किसी इम्तियाज़ी सुलूक का तस्वुर व इमकान भी नाजायज़ व ऐसा कौमी व मुल्की जर्म समझा जाता हो बड़ी से बड़ी सजा का मस्तहिक हैं। एक–एक शख्स की जान और इज्ज़त, इबादतगाहों से ज्यादा मुकद्दस और ताजमहल, कुतुबमीनार और एलोरा और अजन्ता की यादगारों से ज़्यादा मुल्क का कीमती असासा और काबिले हिफाजत खजाना समझा जाए। इनमें से किसी मफलज मरीज, नाकारा और जांबल्ब हस्ती की हिफाजत हजारों मुकद्दस जानों, लाखों मुकद्दस दरख्तों और दर्जनों मुकद्दस दरियाओं की ताजीम व हिफाजत से ज्यादा जरूरी समझी जाती हों। और जब कभी इन दोनों में तरजीह व इन्तिख़ाब का सवाल पेश आए तो एक मुलहिद के लिए भी इस बारे में कोई तरदुद न हो कि इन्सान बिल उमूम और हिन्दुस्तान का शहरी बिलखुसूस इन सबसे ज्यादा कीमती और काबिले हिफ़ाजत है। हुसूले आज़ादी के बाद फिरकावाराना फसादात का तख़ययुल जो अंग्रेजों ने अपनी सियासी व इन्तिज़ामी मस्लहतों से पैदा किया था, इस तरह हाफिज से महव और ज़िन्दगी से नापैद हो जाना चाहिए था, कि हमारे इन बच्चों और नवजवानों के लिए जिन्होंने १९४७ के बाद होश संभाला है, उनका समझना ऐसा ही मुश्किल हो जाए जैसा कि तारीख के बईद अलकयास वाक्यात का समझना मुश्किल होता है।

मज़हबी व फिरकावाराना बुनियाद पर किसी मुसलमान का कत्ल, उसकी बेइज्ज़ती और उस पर दस्तदराजी, एक ऐसा शर्मनाक और नाकाबिले बर्दाश्त जुर्म समझा जाए जिस पर हुकूमत की सारी मशीनरी हरकत में आ जाए और उसके नताएज इतने संगीन हों कि फिर किसी मुल्क दुश्मन और शरीरुन्नफ्स को इस तजुर्बे की हिम्मत न पड़े, मुल्क की बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी पर मुसलमान पर एतमाद किया जा सके, फौज, पुलिस, और निज़ामे हुकूमत में उनको बड़ी से बड़ी क्लीदी जगहें हासिल हों, उनकी जबान, उनकी मज़हबी तालीम, उनका कल्चर और उनका पर्सनल लॉ, न सिर्फ महफूज़ हो बल्कि मुल्क का एक कीमती सरमाया होने की हैसियत से उनकी नशोनुमा व तरक्की का पूरा–पूरा मौका हासिल हो, किसी लम्हा भी यह ख्याल उनके करीब न आने पाए कि जबान, कल्वर, पर्सनल लॉ और मजहबी तालीम की आजादी के लिहाज से अंग्रेजी हुकूमत का तारीक व शर्मनाक ज़माना उनके लिए बेहतर और गनीमत था, किसी मुसलमान का बड़े से बड़े दिमागी अदमे तवाजुन के मौके पर इस बात का तसव्वुर करना और गलामी के जमाने को याद करना हिन्दस्तान की जम्हूरी हुकूमत की सबसे बड़ी नाकामी और जंगे आजादी के तक़द्दुस, उसकी आबरू और नामूस पर धब्बा तसवर किया जाए और जंगे आजादी के सैंकड़ों मुखलिस रहनुमाओं और लाखों बेलौस रजाकारों की रूह को अजीयत पहुंचाने के मुरादिफ समझा जाए और अगर इस मुल्क के किसी दूर–दराज के गोशे में भी कोई सितम रसीदा मुसलमान आजादी के अहद का गुलामी के इस दौर से तकाबुल करने लगे और अपने जहन के किसी मखफी गोशे में भी मजहबी आजादी के लिहाज़ से इस दौर को तरजीह दे तो उसके लिए हिन्दुस्तानी रहनुमा गांधी जी की तरह गांधी जी की तरह व्रत रखना ज़रूरी समझें और हिन्दुस्तान के सबसे बड़े ज़िम्मेदार इन्सान का सर नदामत से झुक जाए, अगर हिन्दुस्तान के किसी कोने में किसी मुसलमान की नक्सीर भी फूट जाए तो इसकी तहकीकात और इसके असबाब को मालूम करने के लिए मरकजी हुकूमत से लेकर रियासती हुकूमत तक इसमें जुम्बिश और हरकत पैदा हो जाए।

हिन्दुस्तान में जो अफ़सोसनाक सूरतेहाल कायम है, इसक अख़लाकी, कानूनी, दस्तूरी, सियासी

किसी सूरत से भी कोई जवाज़ नहीं। यह सूरतेहाल हिन्दुस्तान के लिए रुस्वाकुन, एतमाद और इत्तिहाद की फिजा के लिए संगे गरां और हमा जहती, तरक्की, खुशहाली और इस्तिहकाम नेज़ बैनुल अकवामी एतमाद के लिए सख्त मुज़िर है, इसने मुल्क की बहुत सी नवखेज़ और पुरजोश सलाहियतों को तामीर के बजाए तख़रीब पर लगा दिया और मुल्क में शक व शुब्हा, बेएतमादी, रंज व आज़रदगी, शिकवा व शिकायत, गम व गुस्सा की एक ऐसी फ़िज़ा पैदा कर दी है जिसका जद्दोजहद और तनाज़ा लिलबका के उस अहद में कोई जवाज़ नहीं और हिन्दुस्तान के जैसे अजीम मुल्क के लिए जो निहायत नाजुक जुगराफियाई और सियासी नुक्ता पर वाकेअ है कोई गुंजाइश नहीं। दूसरी तरफ पांच–छ: करोड़ की अज़ीम अक्लियत जो हिन्दुस्तान की तामीर व तरक्की के काम में निहायत अहम और फैसलाकन किरदार अदा कर सकती थी, वह अपनी जान व माल , इज्ज़त व नामूस, ज़बान, कल्चर और तालीम के अदमे तहफफुज़ के एहसास से गैर मुतमईन, खाएफ और मलूल है और इसका असर उसकी पूरी जिन्दगी, उसके वलवला कार, नशात तबियत, कूव्वते अमल और उमंगो और तवानाइयों पर पड़ रहा है, वह रोज बरोज़ अफसुरदा,मायूस और अपने मुस्तकिबल की तरफ से गैर मुतमईन होती जा रही है।

****

करिअर नामा

* महिला बाल विकास विभाग, महाराष्ट्र जल्द ही कुछ पदों के लिए भर्ती करेगा। इसके लिए नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। यह भर्ती जिला बाल संरक्षण अधिकारी, संरक्षण अधिकारी, कानूनी–सह–परिवीक्षा अधिकारी, परामर्शदाता, सामाजिक कार्यकर्ता, लेखाकार, डेटा विश्र्लेषक, सहायक–सह–डेटा एंट्री ऑपरेटर, आउटरीच कार्यकर्ता के पदों के लिए होगी। योग्य उम्मीदवारों को दिए गए लिंक के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करना होगा। आवेदन करने की अंतिम तिथि १९ अगस्त २०२२ है

* लोकप्रिय रेस्टोरेंट टेक्नोलॉजी और डाइनिंग प्लेटफॉर्म डाइनआउट (स्विगी रिक्रूटमेंट २०२२) हासिल करने के बाद स्विगी अपनी टीम का विस्तार कर रहा है। स्विगी ने अब सॉफ्टवेयर इंजीनियर, क्लस्टर मैनेजर के पदों पर भर्ती की घोषणा की है। स्विगी कंपनी देश के कई शहरों में इन पदों पर भर्ती करेगी। इस भर्ती के लिए इच्छुक उम्मीदवारों को ऑनलाइन आवेदन करना होगा। इस भर्ती के माध्यम से अकाउंट्स मैनेजर–रिटेल और अकाउंट्स मैनेजर–प्रीमियम के रिक्त पदों को भरने जा रहे हैं।

* सरकारी नौकरी चाहने वालों के लिए एक अच्छी खबर है। जल शक्ति भारती २०२२ नागपुर में २६ सीटों के लिए भर्ती। यह भर्ती स्टाफ कार ड्राइवर (सामान्य श्रेणी) के पदों के लिए है। इसके लिए इच्छुक उम्मीदवारों को नीचे दिए गए पते पर ऑफलाइन मोड के माध्यम से आवेदन करना होगा। आवेदन करने की अंतिम तिथि २१ अगस्त २०२२ है। jalshakti-dowr.gov.in

* भारत–तिब्बत सीमा पुलिस बल भर्ती शुरू हो गई है। इसके माध्यम से (खढ्इझ इहरींळ २०२२) कांस्टेबल (बढ़ई), कांस्टेबल (मेसन), कांस्टेबल (प्लम्बर) के १०८ पद भरे जाने वाले हैं। इच्छुक उम्मीदवारों को ऑनलाइन आवेदन करना होगा। आवेदन करने की अंतिम तिथि १७ सितंबर २०२२ है।itbpolice.nic.in

आखिरत बेहतरीन और बाकी रहनेवाली है

इब्ने मसऊद रजि० सहाबी से रिवायत है कि नबी करीम स०अ० ने फरमाया कि दाऊद अलैहिस्सलाम ने। (एक बार) अर्ज़ किया कि या अल्लाह! उस शख्स का क्या सिला है जो तेरी रज़ाजोई के लिए मैय्यत के साथ उसकी क़ब्र तक जाए?इरशाद हुआ; उसका सिला यह है कि खुद उसके जनाजे के साथ मेरे फ़रिश्ते जाएंगे और उसकी रूह भी नेक रूहों के साथ रहा करेगी। अल्लाह अल्लाह! बन्दा–ए–मोमिन ज़मीन के नज़दीक कैसा मुअज़्ज़ व मुकर्रम होता है, उसका जिक्र ऊपर की हदीस में आ चुका है कि हर कतअ ज़मीन उसे अपने आगोश–ए–राहत में लेने के लिए बेकरार रहता है और वह आसमान के नज़दीक कितना मुहतरम होता है, इसका बयान पहले किसी हदीस में हो चुका है और अब बयान इसका हो रहा है कि फ़रिश्ते जो खुद एक मुकर्रब तरीन मखलूक हैं, उनके यहां बन्दा–ए–मोमिन का यह ऐजाज़ और क्या मर्तबा होता है?फ़रिश्ते उसकी मैय्यत के जुलू में, उसके ऐजाज व इकराम में बतौर खिदमत व हश्म के चलेंगे और उसके हक में दुआएं करते रहेंगे। कौन मुसलमान ऐसा होगा जो अपने इस ऐजाज़ के मुशाहिदे के बाद खुद अपने ऊपर रश्क न करेगा और अपने को मुबारकबाद न देगा कि मैं किस जुल्मत कदे और किस जेलखाने से छूट कर ऐसे राहतकदे और ऐसे इज़्ज़त कदे में आ गया। **कब्र यानि बरज़खकी नेमतें** :सईद बिन अलमसैब रजि० से रिवायत है कि हज़रत आयशा रजि० ने कहा; या रसूलुल्लाह! आप स०अ० ने जब से मुनकर व नकीर की आवाज और कब्र के दहाने का मुझसे जिक्र फ़रमाया, कोई चीज़ मुझको तसल्ली मे नाफ़ेअ नहीं होती है। आप स०अ० ने फरमाया: ऐ आयशा! मुनकर व नकीर की आवाजें मोमिनों के कानों में ऐसी होंगी जैसे सुरमा आंख में (लज़्ज़त बख्श होता है) और क़ब्र का फ़िशार मोमिन के हक में ऐसा राहत बख्श होगा कि जैसे कोई बेटा मादरे मुशफिका से दर्दे सर की शिकायत करे और वह उसके सर को नर्म नर्म दबाए। सुन लिया आपने! मुनकर व नकीर की वह चीख और डांट जो बड़े मज़बूत दिलवालों को हिलाकर रख दे और सबको हिला दे, वह मोमिनों के हक में ऐसी राहतबख्श व लज़्ज़तबख्श होगी जैसे कोई आंख में सुरमा लगाकर ठण्डक हासिल करता है और क़ब्र का वह फ़िशार जो दुश्मनाने खुदा के हक में यूं होगा कि जैसे अण्डे पर कोई भारी पत्थर गिरागर उसको चकनाचूर कर दे, वह मोमिन के हक़ में ऐसा होगा जैसे कोई शफीक मां अपने प्यारे बेटे सर प्यार व मुहब्बत से दबाती रहे। क्या खुदा न ख्वास्ता आपको इस बयान में किसी मुबालगे, किसी तसन्ने व तकल्लुफ़, किसी शायरी का एहतिमाल है?जिस आलमे कब्र को आप इस दर्जे मुहीत व दहशतनाक समझते थे और जिस आलमे बरज़खू के नाम से पहले आपके रोंगटे खड़े होते थे उसका उस दर्जा तशफ़ूफ़ी बख्श हाल आपने सादिक व मसदूक रसूले मकबूल स०अ० की ज़बान से सुन लिया या नहीं, अब भी वह कोई चीज़ वहशत व दहशत की किसी दर्जे में किसी मोमिन के लिए बाकी रह गयी? या उल्टा वह मकाने राहत व सामाने मसर्रत व सामाने ऐश हर ईमान वाले के हक में बन गयी। हजतर अबू सईद खुदरी सहाबी रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फरमाया कि जब बन्दा–ए–मोमिन को दफन किया जाता है तो क़ब्र उससे कहती है कि खूब आए तुम, बहुत खूब आए तुम , तुम तो मुझे महबूब तर ही थे जो मेरी सतह पर चलते थे, तो आज मैं तेरी कार परदाज बना दी गई हूं और तुम मेरे पास आए हो तो देखना अपने साथ मेरा मामला। फिर हद्दे नज़र तक कब्र उस बन्दे पर फ़राख हो जाती है और उसका दरवाजा बेहिश्त की तरफ का खोल दिया जाता है और रसूलुल्लाह स०अ० ने यह भी फ़रमाया कि कब्र या तो एक बाग हो जाती है, बेहिश्त के बागों में से, या खन्दक हो जाती है, दोजख की खन्दकों में से।

शहादते सैय्यदना ऊमर फारूक रजि०

२७ जिलहज सन २३ हिजरी बुध का दिन था। जब सैय्यदना ऊमर फारूक रजि० मस्जिदे नबवी में नमाजे फजर की इमामत करवा रहे थे। नमाज के दौरान अबूलुलू फैरोज नामी मजूसी गुलाम ने जहर आलूद खंजीर से खलीफा दुव्वम सैय्यदना ऊमर फारूक रजि० पर तीन वार किये और आप जखमी होकर गिर पडे। फिर अब्दुल रहमान बिन औफ रजि० ने नमाज की इमामत करवायी। बदबख्त कातील ने मस्जिद से भागते हुये,तेरा के करीब मुसलमानों पर वार किया, जिनमें से सात शहीद हो गये और पकडे जाने पर खुदखुशी कर ली। आप को बेहोशी के हालत मे घर लाया गया । होश आने पर आप को बता दिया गया की हमलाआवर मजूसी था। तो आप रजि० ने अल्लाह का शुक्र अदा किया की हमलावर मुस्लिम न था। आप पर गश्ते इलाही की कैफियत तारी हो गयी। आपने अपने बेटे अब्दुल्लाह को हुक्म दिया के मेरा सर अपने गोद से हटाकर जमीन पर रख दो ताकि अल्लाह तआला मुझ पर रहम और करम का माअमला फरमाये। इस मौके पर हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० आप को तसल्लीयां और बशारते दे रहे थे। तीन दिन कुर्ब मे गुजारने के बाद आप जख्मों के ताबा न रहे। और १ मुहर्रमुल हराम सन २४ हिजरी को ६२ साल की उमर मे जामे शहादत नोश फरमा गये। हजरत सुहैब रजि० ने नमाजे जनाजा पढायी। हजरत अलि रजि०, हजरत उस्मान रजि०, हजरत अब्दुर्रहमान रजि०, हजरत सईद बिन वक्कास रजि०, हजरत लिहा रजि०, हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ रजि० ने सैय्यदना उमर रजि० को कबर में उतारा । हजरत उमर रजि० का इंतकाल हुआ तो आपके सल्तनत के दूरदराज इलाके का एक चरवाहा भागता हुआ आया और चीख कर बोला ''लोगों हजरत उमर रजि० का इंतकाल हो गया। ?'' लोगों ने हैरत से पूछा तुम मदीने से हजारो मील जंगल मे दूर हो , तुम्हे इस वाकीये की इत्तला किसने दी । चरवाहा बोला '' जबतक हजरत ऊमर फारूक रजि० जिंदा थे, मेरी भेडे जंगल में बेखौफ फिरती थी । और कोई दरिंदा इनकी तरफ आंख उठाकर नहीं देखता था। लेकिन आज पहली बार एक भेडीया मेरी भेड का बच्चा उठाकर ले गया। मैने भेडीये के जुर्रत से जान लिया,आज दुनिया में उमर रजि० नहीं है।''

नाम उमर, लकब फारूके आजम, कुन्नीयत अबु हाफज, वालिद का नाम हातमा बिन्ते हश्शाम था। कुरैश की शाख बनू आदी से ताल्लुक था । आप रजि० ५८३ पैदा हुये । रवायती अरब माहौल में तरबीयत हासिल हुयी। उंट चराये और फन सपागिरी पर भी दस्तर हासिल थी । पहलवानी , शहसवारी में मुम्ताज मकान हासिल था। आपके घराने में सबसे पहले आपके बहनोई सईद और बहन फातमा ने इस्लाम कबूल किया। इसके बाद आपका सिना भी इस्लाम के नूर से मुनव्वर हो गया। हजरत उमर के कुबूले इस्लाम से मुसलमानों के हौसले बुलंद हो गये। हजरत उमर का जमाना खिलाफते फतूहात का दौर था। इसमे दो अजीम ताकतों इरान और रोम को शिकस्त देकर इरान,इराक और शाम को मम्लिकत इस्लामीया मे शामील किया। बैतुल मुकद्दस के फताह के बाद आप खुद इस शहर में तशरीफ ले गये। दौरे खिलाफत तकरीबन साडे दस साल तक जारी रहा। इस दौरान (१)सन हिजरी का आगाज किया गया। (२) मुल्क में बाकायदा अदालती निजाम रायज किया गया। (३) शराब नोशी की सजा ८० कोडे मुकर्रर की गयी ।(४) इस्लामी रियासत के अहम मर्कज में फौजी छावनिया कायम की गयी जहाँ हर वक्त ताजा व दम सिपाही तयार थे (५) अमन कायम करने के लिए पुलिस का मुहकमा कायम किया गया।



बेगम हजरत महल नॅशनल स्कॉलरशिप 2022

(मुस्लिम, ईसाई, जैन, बौद्ध, सिख और पारसी अल्पसंख्याक लड़कियों के लिए)

✻भारत के सभी सरकारी और निजी स्कूल,कॉलेज की अल्पसंख्यक लड़कियां, उसी तरह मराठी, उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती, सभी प्रकार के माध्यम की अल्पसंख्यक लड़कियां इसका लाभ उठा सकती है।

✻ पिछली कक्षा में : ५०% मार्क्स

✻ वार्षिक इनकम : २ लाख रुपये

✻ इस वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन करें : www.scholarships.gov.in
और उस की एक कॉपी अपने विद्यालय में जमा करें

✻ ९वीं क्लास की लड़कियों के लिए ५००० रुपए – प्री–मॅट्रिक कॅटेगरी

✻ १०वीं क्लास की लड़कियों के लिए ५००० रुपए – प्री–मॅट्रिक कॅटेगरी

✻ ११वीं क्लास की लड़कियों के लिए ६००० रुपए – पोस्ट–मॅट्रिक कॅटेगरी

✻ १२वीं क्लास की लडकियों के लिए ६००० रुपए – पोस्ट–मॅटिक कॅटेगरी

✻ ४ साल में कुल मीलाकर २२००० रुपए
(कॅटेगरी सिलेक्ट करके पुरा फॉर्म भरने के बाद ही आपको बेगम हजरत महल का ऑप्शन आयेगा)

✻ जिन्हें पिछले साल स्कॉलरशिप मिली थी, उन्हें इसे नए से अप्लाई करना होगा।

✻ बेगम हजरत महल और एन.एस.पी स्कॉलरशिप, दोनों मे से जिस की स्कॉलरशिप राशि अधिक हो उसी एक को आवेदन करें वरना दोनों आवेदन खारिज हो जाएंगे..

✻ पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन है, दस्तावेजों को स्कैन कर अपलोड करना होगा।

✻ १०० केबी २०० केबी के बीच।

✻ ऑनलाइन आवेदन प्रिंट और अपलोड किए गए दस्तावेज विद्यालय मे जमा करें।

✻ रजिस्ट्रेशन के बाद रजिस्ट्रेशन नंबर सेव करे, बाद में आप उस का उपयोग कर स्कॉलरशिप का स्टेटस जांच सकते हैं ।

✻ आवश्यक दस्तावेज ✻

१. आधार कार्ड (बैंक खाते से लिंक होना चाहिए)
२. मार्कशीट ओरिजनल या सत्य प्रत (नाम, क्लास, वर्ष मार्क्स और प्रतिशत क्लिअर लिखा होना चाहिए)
३. डोमासाईल/ नॅशनालिटी सर्टिफिकेट
४. तहसीलदार द्वारा जारी इनकम सर्टिफिकेट
५. बँक पासबुक (यदि नहीं है,तो माता/पिता के साथ संयुक्त खाता)
६. बोनाफाइड सर्टिफिकेट फोटो के साथ
७. अल्पसंख्यक होने का स्वयंघोषणापत्र

अच्छे रिश्ते

नाम: सलवा एजाज चाँद

मॅरीटल स्टेटस: बेवा

जन्म तारीख: ०६/०३/१९९१

उंची: ५ फूट १ इंच, रंग : गोरा

पढाई: बी.कॉम

बाप का नाम: हाजी अब्दुलरशीद कलदगी

माँ का नाम: हाजन सईदा अब्दुलरशीद कलदगी

भाई: १ शादीुदा

पत्ता: कोकरे गल्ली,निपाणी, जि.बेळगांव

मो: ८६६०३५८६०७
८२१७८९७९००

(१ लडका, १लडकी)

(तलाक शुदा)

नाम: रहीम यासीन मुजावर

जन्म तारीख: १२/०२/१९९४

शिक्षण : बी.ए (इतिहास)

नोकरी: सुपर वायझर (पर्मनंट) ग्रामोटीक प्रा.लि. इस्लामपूर

पगार: १५,००० हजार (महिना)

उंची: ५ फूट ६ इंच

बहन: १ (विवाहीत)
नाजमीन जमीर मुजावर, मालगांव

बाप का नाम: यासीन शौकतअली मुजावर
राजाराम सालव्हेनस लि. इस्लामपूर

माँ का नाम: मैमून यासीन मुजावर

मो: ८८६७८६६६२१

(एक गुंठा जागा, खुद का घर)

नाम: शगुफ्ता महमंद कलावंत

मॅरीटल स्टेटस: कुवाँरी

जन्म तारीख: १०/१२/१९९७

उंची: ५ फूट ८ इंच, रंग : गोरा

पढाई: बी.एस.सी (मायक्रो), डी.फार्मा

बाप का नाम: महमंद रहीम कलावंत

माँ का नाम: शाहीदा महमंद कलावंत

भाई: १ अमन महमंद कलावंत

पत्ता: म्हैसाळ,तलाठी ऑफिस के पीछे, ता. मिरज , जि.सांगली

मो: ९५१८७८२६२८
८६०५३२८२२५

नाम: आरीफा रफीक तांबोळी

मॅरीटल स्टेटस: कुँवारी

जन्म तारीख: ०५/०८/१९९०

उंची: ५ फूट २ इंच, रंग: गोरा

पढाई: बी.ए

बाप का नाम: रफीक अब्दुलकरीम तांबोळी

माँ का नाम: शाहीदा रफीक तांबोळी

बहन: १, शिरीन सरफराज शेख

भाई: १, राहील रफीक तांबोळी

पता: गंगावेश, कोल्हापूर

मो: ९०२८८४२२२०
९०२८०७२४२४

रिश्तेदार: शिकलगार, तांबोळी,

नाम: अफशान जावेद सनदी

मॅरीटल स्टेटस: कुँवारी

जन्म तारीख: २७ /११/१९९६

उंची: ५ फूट ४ इंच, रंग: गोरा

पढाई: बी.एस.सी. मॅथ्स, एम.बी.ए. (फायनान्स)

बाप का नाम: जावेद बादशाह सनदी (इंजि.) ऐव्हरी इंडिया चेअरमन ऑफ स्वास्तिक इंडस्ट्रिज अॅण्ड समय रिसर्च इंडस्ट्रिज

माँ का नाम: गव्हेंमेंट सर्व्हंट प्रायमरी टिचर

भाई: १, बी.बी.ए. पी.जी.डी.एम. एम.बी.ए. पी.जी.पी.एम.

पता: ३३६६-बी.-११ गिरीश सिनेमा हॉलजवळ, कुरुंदवाड, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापूर

मो: ९६२३२००६००, ७७९८११०५७०

लडका वेल एज्युकेटेड, कम्पॅटिबल, समझदार, वेल सेटलड होना चाहिए।

नाम: तौफिक रज्ज़ाक मुजावर

मॅरीटल स्टेटस: कुवाँरा

जन्म तारीख: २६/०४/१९९०

उंची: ५ फूट १० इंच, रंग : गेहूँआ

पढाई: १२ वी

व्यवसाय: डिजीटल आर्टस, ताकारी

जमीन: १.५ एकर जमीन

बाप का नाम: रज्ज़ाक बाबालाल मुजावर

माँ का नाम: रूक्साना रज्ज़ाक मुजावर

भाई: १ , बहन: १

पत्ता: मु.पो. दह्यारी, ता. पलूस, जि. सांगली

रिश्तेदार: मुल्ला, पटेल, शेख, मुलाणी, जमादार, इनामदार

मो: ७३८५६००८८१

नाम : फिरोज कलदगी

जन्मतारीख : ७ मे १९९६

उंची : ५.५, रंग गोरा

पढाई : बी.एम.एल.टी

व्यवसाय: स्क्रॅप बिझनेस

बाप का नाम : ख्वॉजासाहेब कलगदगी

व्यवसाय : स्क्रॅप बिझनेस

मा का नाम : बशीरुन उर्फ अफरीन कलदगी

भाई : १ महंमद फैज कलदगी (बी.ई.सिव्हिल)

बहन : नही

पता : डी.सी.पाटील हॉस्पिटल के पिझे, बागलकोट रोड, बिजापूर ५८६१०१

संपर्क : ९९१६४४११३४, ९९१६७४४००३

नाम: आयेशा अकबर मोमिन

मॅरीटल स्टेटस: तलाकशुदा

जन्म तारीख: २२/०४/१९९४

उंची: ४ फूट १० इंच, रंग : गोरा

पढाई: एम.ए

बाप का नाम: अकबर युसूफ मोमिन

माँ का नाम: अमीना अकबर मोमिन

भाई: १ आदिल अकबर मोमिन

पत्ता: भाळवणी , जि. सांगली

(३ साल की लडकी)

मो: ९७६७१०११९२

नाम : इरफान जलाल राजकादरी
जन्मतारीख : २४।६।९३
उंची : ५.५, रंग गोरा
पढाई : सीव्हिल ड्राफ्समन
व्यवसाय: विटा एम.पी.ए.एल. सुपरवायजर लँड सर्व्हेअर
बाप का नाम : जलालउद्दीन राजकादरी
व्यवसाय : राजकादरी ब्रदर्स
मा का नाम : सलमा जलाल राजकादरी
भाई : २ फिरोज जलाल राजकादरी,रहीम जलाल राजकादरी
बहन : नही
पता : मु.पो. आय.टी.आय. कॉलेज विटा, ता. खानापूर जि. सांगली.
संपर्क : ७२७६७४००७७२,

नाम: बालेचाँद दस्तगीर बागवान
मॅरीटल स्टेटस: तलाकशुदा
जन्म तारीख: ०२/०४/१९८५
उंची: ५ फूट २ इंच, रंग : गोरा
पढाई: १२ वी (फूट वेअर, अॅपे रिक्षा)
बाप का नाम: दस्तगीर बागवान
भाई: २ (शादीशुदा)
पत्ता: कुरूंदवाड,ता. शिरोळ, जि. कोल्हापूर
मो: ८६००८८७१२२

नाम : शबनम दिलावर काझी
जन्मतारीख : २९ जून १९९७
उंची : ५.३, रंग गोरा
पढाई : बी.सी.ए. इन्फोसेस हिजवडी, पुणे
व्यवसाय:
बाप का नाम : दिलावर गफूर काझी
मा का नाम : अफसाना दिलावर काझी
भाई : १ साहील दिलावर काझी
बहन : आईशा दिलावर काझी
ता : मु.पो. वडूज, ता. खटाव, जि. सातारा
संपर्क : ९८८१७६३२८६,९१३०७०७७१४

नाम: आसिफ बशीर मुल्ला
मॅरीटल स्टेटस: कुवाँरा
जन्म तारीख: ०८/०५/१९९९
उंची: ५ फूट ५ इंच, रंग : गोरा
पढाई: १२ वी (होलसेल चिकन सेंटर)
बाप का नाम: बशीर गफूर मुल्ला
माँ का नाम: अफ्साना बशीर मुल्ला
भाई: १
पत्ता: भाळवणी , जि. सांगली
मो: ७३८५६००८८१